लेखा भारती

12वाँ अंक

2016

रक्षा लेखा प्रधान नियंत्रक (मध्य कमान)

1 करियप्पा मार्ग, लखनऊ

दैनिक संकल्प

सर्वश्रेष्ठ हों, सर्वप्रिय हों,
कार्य करें हम सर्वोत्तम ।
यही हमारा मूलमंत्र हो,
यही हमारा लक्ष्य परम ।।

वायु, अग्नि, धरा औ अंबर,
यही संदेशा देते हैं ।
कार्य करें हम श्रेष्ठ निरंतर,
हो पाये ना कोई भूल ।।
सर्वश्रेष्ठ हों .....

जीवनदायी जल को लेकर,
नदी निरंतर बहती है ।
अनुशासित औ नियमबद्ध,
सबको अमृत वह देती है ।।
सर्वश्रेष्ठ हों .....

नमन करें उन सेनानी को,
कष्ट निरंतर पाते हैं ।
मातृभूमि रक्षा हित अपने,
प्राणों की बलि लगाते हैं ।।
सर्वश्रेष्ठ हों .....

आओ मिलकर करें प्रतिज्ञा,
सर्वश्रेष्ठ बन जाना है ।
ज्ञान विज्ञान और अनुशासन को,
जीवन की धुरी बनाना है ।।
सर्वश्रेष्ठ हों .....

निर्मल मन हो सदा हमारा ,
स्वच्छ हमारा हो परिवेश ।
नूतन का करके अभिनन्दन,
वैज्ञानिक हो दृष्टिकोण ।।
सर्वश्रेष्ठ हों .....

एक दूजे पर गर्व करें हम,
गर्वोन्नत हो सबका शीष ।
संकट में बनकर हम सम्बल,
मानवता का लें आशीष ।।
सर्वश्रेष्ठ हों .....

रक्षा लेखा प्रधान नियंत्रक
(मध्य कमान) लखनऊ

शोभना जोशी, भा.र.ले.से.
Shobhana Joshi, IDAS
रक्षा लेखा महानियंत्रक
CGDA

सत्यमेव जयते

रक्षा लेखा महानियंत्रक
Controller General of Defence Accounts
उलान बटार मार्ग, पालम
Ulan Batar Road, Palam
दिल्ली छावनी - 110010
Delhi Cantt - 110010
दूरभाष / Tel. : 011-25674782
फैक्स / Fax : 011-25674776
ईमेल / E-mail : sj.cgda@nic.in

संदेश

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हो रही है कि मध्य क्षेत्र की प्रतिनिधि पत्रिका के रूप में हिंदी के प्रचार-प्रसार हेतु रक्षा लेखा प्रधान नियंत्रक (म.क.), लखनऊ द्वारा गृह पत्रिका "लेखा भारती" के 12वें अंक का प्रकाशन ई-पत्रिका के रूप में किया जा रहा है। पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन भाषा की प्रगति का सशक्त माध्यम है। इनसे विभाग में कार्यरत रचनात्मक अभिरुचि के कार्मिकों को अभिव्यक्ति का एक उचित मंच भी प्राप्त होता है।

मुझे विश्वास है कि यह पत्रिका न केवल अपने सुरुचिपूर्ण एवं शिक्षाप्रद लेखों एवं कविताओं के द्वारा लोगों को शिक्षित करने का माध्यम बनेगी अपितु सभी को अगले अंकों में अपना प्रतिभाग देने के लिए प्रेरित भी करेगी। हिंदी का अधिक से अधिक प्रयोग करना हम सबका दायित्व है। निःसंदेह इस पत्रिका के माध्यम से राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार को बढ़ावा मिलेगा।

मैं ' लेखा भारती ' के प्रकाशक एवं संपादक मंडल को अपनी हार्दिक बधाई देते हुए इस ई-पत्रिका की पूर्ण सफलता की कामना करती हूँ।

(शोभना जोशी)

राजभाषा वंदन

शब्दों, वर्णों और छंदों की
हिंदी है अनंत धरोहर
है असीम इसकी प्रस्तुति
अनुपम है इसका हर स्वर।

हिंदी बहता नीर है
धीर, वीर, गंभीर है
नहीं है यह मात्र एक भाषा
हिंदी है जन–जन की आशा।

भाषा नहीं भावना है यह
अभिव्यक्ति का है आसमान
परिवर्तन की चिर शक्ति इसमें
यह है देश का स्वाभिमान।

स्वतंत्रता आन्दोलन में उभरी
बन हिंदी एक सशक्त हथियार
राष्ट्रीय एकता और क्रांति की
थी यह अनोखी सूत्रधार।

हिंदी है विज्ञान की भाषा
कला और ज्ञान की भाषा
जन–जन के उत्थान की भाषा
गौरव और सम्मान की भाषा।

मोनिका जैन (आभार –www-hindithoughts-com)

लेखा भारती

अंक-12	वर्ष 2015
संरक्षक	संजीव कुमार , भा.र.ले.से. रक्षा लेखा प्रधान नियंत्रक
परामर्श समिति	मिनी श्री बिष्ट , भा.र.ले.से. रक्षा लेखा अपर नियंत्रक अतुल प्रकाश मिश्रा, भा.र.ले.से. रक्षा लेखा उप नियंत्रक शशि प्रताप सिंह , भा.र.ले.से. रक्षा लेखा सहायक नियंत्रक चंद्र प्रकाश वरिष्ठ लेखा अधिकारी
संपादक	महेश बाबू गुप्ता वरिष्ठ लेखा अधिकारी
सम्पादन सहयोग	राजीव कुमार रमेश सिंह राहुल राव
फोन/फैक्स	0522-2451547/2451993
मेल	cda-luck@nic.in
संपर्क सूत्र	हिन्दी कक्ष कार्यालय रक्षा लेखा प्रधान नियंत्रक (मध्य कमान) करियप्पा मार्ग , लखनऊ – 226002

पत्रिका मे प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त किए गए विचार लेखकों के व्यक्तिगत हैं। लेखकों के विचारों से प्रकाशक / संपादक तथा विभाग का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

संरक्षक की कलम से .....!

'लेखा भारती' के नवीनतम अंक को पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करते हुए, मुझे अपार हर्ष की अनुभूति हो रही है।

पत्रिका में प्रकाशित विस्तृत यात्रा संस्मरण, भावनात्मक लेख, हृदयस्पर्शी कविताएं एवं सुरूचिपूर्ण कहानियाँ द्योतक हैं, उस सृजनात्मक रचनाशक्ति का, जिसका अनुपम उपहार माँ सरस्वती ने सभी रचनाकर्ताओं को आशीर्वाद के रूप में प्रदान किया है। उन सभी को मेरा हार्दिक साधुवाद। इन सुंदर रचनाओं में एक ओर भारतवर्ष की प्राचीन संस्कृति एवं अनुपम धरोहर की स्पष्ट छाप है तो दूसरी ओर शाश्वत जीवन मूल्यों का संदेश जो कि युगों दृ युगों से भारतवासियों एवं सम्पूर्ण मानवजाति के लिए प्रेरणास्रोत रहे हैं। विश्व शांति तथा मानव जीवन को खुशहाल बनाने के लिए आवश्यक साधनों का समावेश भी सुरुचिपूर्ण तरीके से इस संकलन में किया गया है। मानव–जीवन की व्यवहारिक समस्याओं तथा मानव – संवेदनशीलता को भी काफी बारीकी से उजागर करने में यह पत्रिका सफल हुई है।

आशा है कि यह पत्रिका सभी पाठकों को आनंद एवं शिक्षा प्रदान करेगी तथा उन्हें अपने कर्तव्य पथ पर सतत् रूप से चलने का संबल भी प्रदान करेगी।

'लेखा भारती' निरंतर प्रेरक, रोचक तथा उपयोगी रचनाओं से सुसज्जित होकर राष्ट्रभाषा हिंदी के प्रचार व प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाए। यही मेरी कामना है।

शुभकामनाओं सहित ।

संजीव कुमार

सम्पादकीय

हिन्दी प्रेमी प्रधान नियंत्रक महोदय की सतत् प्रेरणा एवं मार्ग–दर्शन का सुफल है कि लेखा भारती का यह अंक नई सज– धज के साथ आपके समक्ष प्रस्तुत है ।

संघ की नीति राजभाषा हिन्दी को थोपने की नहीं है , बल्कि इसे राष्ट्रीय आवश्यकतों को देखते हुए प्रेम और प्रोत्साहन द्वारा आगे बढ़ाने की है । पत्रिका प्रकाशन इसी दिशा में उठाया गया एक विनम्र प्रयास है ।

कोई भी भाषा अपनी सांस्कृतिक विरासत से विमुख नहीं हो सकती है । हिंदी,जो भारत के हृदय स्थल की भाषा रही है, भारतीय संस्कृति की परिचायिका भी है । राजभाषा हिन्दी हमारी अस्मिता की पहचान है तथा राष्ट्र निर्माण का अनिवार्य हिस्सा है। इसकी उन्नति हेतु हमें एक संकल्प के साथ आगे बढ़कर दृढ़ता से कार्य करने की आवश्यकता है । हिन्दी को सार्वदेशिक भाषा के रूप में विकसित करने की आवश्यकता है और इसमें हम सभी को अपनी–अपनी भूमिका निभानी है । इस कार्य में संगठन के साहित्य अनुरागियों का सानिध्य ही हमारा सम्बल है ।

हम 'लेखा भारती' के सभी रचनाकारों के प्रति आभारी हैं , जिन्होंने इस पत्रिका के कलेवर को संवारने में अपना सहयोग प्रदान किया है ।

आशा है 'लेखा भारती' का यह अंक पूर्व के अंकों की भाँति सुधी पाठकों को रूचिकर लगेगा । आपके सुझाव और बहुमूल्य विचारों का स्वागत है ।

महेश बाबू गुप्ता

अनुक्रमणिका

क्रम संख्या	रचनाकार का नाम	रचना का नाम	विधा	पृष्ठ संख्या
1	श्री विजय कुमार, ए.वि.स.	अमरनाथ यात्रा- एक अद्भुत आत्मिक आनंद की अनुभूति	यात्रा वृत्तांत	01
2	श्री रमेश सिंह, कनिष्ठ अनुवादक	राजभाषा हिन्दी – दशा एवं दिशा	लेख	07
3	श्री अशोक कुमार, व.ले.अ.	हत्यारा	कहानी	10
4	श्री अशोक कुमार, व.ले.अ.	नाम	कहानी	11
5	श्री आशुतोष कुमार तिवारी, अनुभाग अधिकारी	ध्रुव तारे की तलाश	कहानी	12
6	श्री श्रीनिवास वत्स, सहायक निदेशक राजभाषा	उसका पसीना मेरा पसीना	लघु कथा	15
7	श्री दिनेश कुमार खरे, लेखा परीक्षक	हिन्दी का प्रयोग: समस्याएँ एवं समाधान	लेख	16
8	श्री संकल्प खरे पुत्र श्री दिनेश खरे	परिवर्तन: प्रकृति का एक शाश्वत नियम	लेख	18
9	कु. शिवांगी खरे पुत्री श्री दिनेश खरे	पुरस्कार का महत्व	लेख	20
10	श्री विजय कुमार, ए.वि.स.	एक दिन और	कविता	21
11	श्री विजय कुमार, ए.वि.स.	यही तो है मुश्किल	कविता	22
12	श्री अनिल कुमार गुप्त, व.ले.अ.	भारत	कविता	23
13	श्री रमेश सिंह, कनिष्ठ अनुवादक	मन-उदगार	कविता	24
14	मो. अशरफ, कनिष्ठ अनुवादक	पागल कवि	कविता	25
15	मो. अशरफ, कनिष्ठ अनुवादक	दफ़्तरी	कविता	26
16	श्री विकास वर्मा, सहा.ए.वि.स.	मेरे पड़ोस में	कविता	26
17	श्री राघवेन्द्र दीक्षित, स.ले.अ.	आओ अच्छे काम करें	कविता	27
18	श्री वीरेन्द्र सिंधू, ले.कर्नल	धरती को महकाएँ	कविता	28
19	श्री राजीव कुमार , स.ले.अ.	खोयीं खुशियाँ	कविता	29
20	श्री विजय अग्रवाल, स.ले.अ.	रिश्ते	कविता	30

21	श्री एस. सी.अस्थाना, लेखाधिकारी	पता नहीं क्यूँ और किस लिए जिये जा रहे हैं हम	कविता	31
22	श्री के.के. वर्मा, व.ले.प.	राष्ट्र-मान	कविता	32
23	श्री राजू कुमार, व.ले.प.	अराजकता	कविता	33
24	श्री अमर सिंह, व.ले.प.	जुनून	कविता	35
25	श्री अमर सिंह, व.ले.प.	कच्चे धागे	कविता	35
26	श्री अमर सिंह, व.ले.प.	आगाज	कविता	36
27	श्री प्रभात रंजन सिंह, व.ले.प.	पर्यावरण बचाओ	कविता	36
28	श्री प्रभात रंजन सिंह, व.ले.प.	चाँद की सीख	कविता	37
29	श्री दिनेश कुमार खरे, लेखा परीक्षक	हिन्दी की प्यास	कविता	38
30	श्रीमती रीना खरे पत्नी श्री दिनेश खरे,	क्योंकि वह गरीब था	कविता	39
31	श्री अवधेश कुमार, लेखा परीक्षक	जिंदगी के रंग	कविता	40
32	श्री अरविंद कुमार सेहतिया, लेखा परीक्षक	ठहरा पंथी	कविता	40
33	श्री सुरेश कुमार, लिपिक	जय हिन्द ही नहीं जय हिन्दी भी	कविता	41
34	श्री सुरेश कुमार , लिपिक	हमारा कार्यालय	कविता	42
35	श्री राम खिलावन, एम.टी.एस.	तुम इम्तेहान ले लो मेरा	कविता	43
36	श्री सुनील शर्मा, संदेशवाहक	जय कलाम	कविता	44
37	श्री त्रिभुवन नारायण सिंह, स.ले.अ.	स्वच्छ भारत अभियान	निबंध	45
38	श्री यशपाल सिंह, लेखा परीक्षक	स्वच्छ भारत अभियान	निबंध	47
39	श्री उमेश गर्ग, निजी सचिव	नितोपदेश संकलन	कथन	50

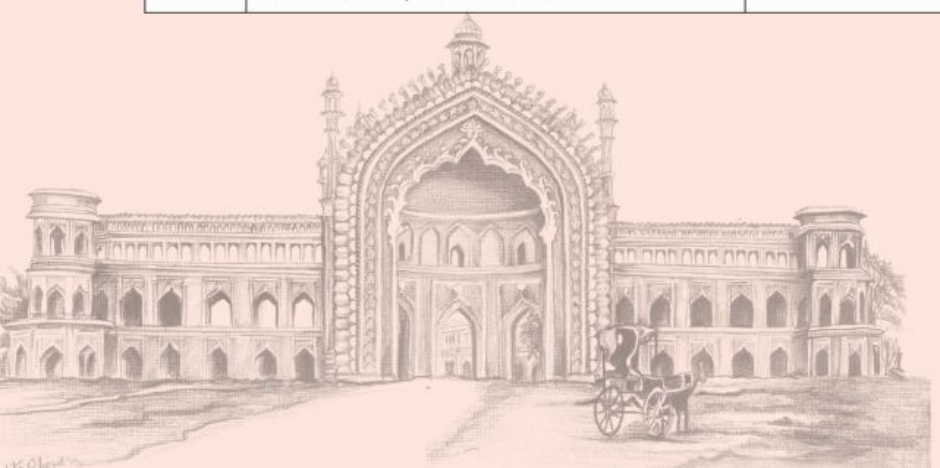

अमरनाथ यात्रा – एक अद्भुत आत्मिक आनंद की अनुभूति

अमरनाथ हिन्दुओं का एक प्रमुख तीर्थस्थल है। यह जम्मू – कश्मीर राज्य के श्रीनगर शहर के उत्तर – पूर्व में 135 सहस्त्र मीटर दूर समुद्र तल से 3888 मीटर (13,500 फुट) की ऊंचाई पर स्थित है। इस गुफा की लंबाई (भीतर की ओर गहराई) 19 मीटर और चौड़ाई 16 मीटर है। यह गुफा लगभग 150 फीट क्षेत्र में फैली है और गुफा 11 मीटर ऊंची है तथा इसमें हजारों श्रद्धालु समा सकते हैं। प्रकृति का अद्भुत वैभव अमरनाथ गुफा, भगवान शिव के प्रमुख धार्मिक स्थलों में से एक है। अमरनाथ को तीर्थों का तीर्थ कहा जाता है। एक पौराणिक गाथा के अनुसार भगवान शिव ने पार्वती को अमरत्व का रहस्य (जीवन और मृत्यु के रहस्य) बताने के लिए इस गुफा को चुना था। मृत्यु को जीतने वाले मृत्युंजय शिव अमर हैं, इसलिए अमरेश्वर भी कहलाते हैं। जनसाधारण अमरेश्वर को ही अमरनाथ कहकर पुकारते हैं।

श्री अमरनाथ जी की पवित्र गुफा

इतिहास

श्री अमरनाथ यात्रा के उद्गम के बारे में इतिहासकारों के अलग–अलग विचार हैं। कुछ लोगों का विचार है कि यह ऐतिहासिक समय से संक्षिप्त व्यवधान के साथ चली आ रही है जबकि अन्य लोगों का कहना है कि यह 18वीं तथा 19वीं शताब्दी में मलिकों या मुस्लिम गडरियों द्वारा पवित्र गुफा का पता लगाने के बाद शुरू हुई। आज भी चौथाई चढ़ावा उस मुसलमान गडरिए के वंशजों को मिलता है। अमरनाथ तीर्थयात्रियों की ऐतिहासिकता का समर्थन करने वाले इतिहासकारों का कहना है कि कश्मीर घाटी पर विदेशी आक्रमणों और हिन्दुओं के वहां से चले जाने से उत्पन्न अशांति के कारण 14वीं शताब्दी के मध्य से लगभग तीन सौ वर्ष की अवधि के लिए यात्रा बाधित रही। कुछ इतिहासकारों का कहना है कि 1869 के ग्रीष्म काल में गुफा की फिर से खोज की गई और पवित्र गुफा की पहली औपचारिक तीर्थ यात्रा तीन साल बाद 1872 में आयोजित की गई थी। इस तीर्थयात्रा में मलिक भी साथ थे। स्वामी विवेकानन्द ने 1898 में 8 अगस्त को अमरनाथ गुफा की यात्रा की थी और बाद में उन्होंने उल्लेख किया कि मैंने सोचा कि बर्फ का लिंग स्वयं शिव हैं। मैंने ऐसी सुन्दर, इतनी प्रेरणादायक कोई चीज नहीं देखी और न ही किसी धार्मिक स्थल का इतना आनन्द लिया है।

शिवलिंग

अमरनाथ गुफा में बर्फ से बना प्रकृतिक शिवलिंग

यहाँ की प्रमुख विशेषता पवित्र गुफा में बर्फ से प्राकृतिक शिवलिंग का निर्मित होना है। प्राकृतिक हिम से निर्मित होने के कारण इसे स्वयंभू हिमानी शिवलिंग भी कहते हैं। आषाढ़ पूर्णिमा से शुरू होकर रक्षाबंधन तक पूरे सावन महीने में होने वाले पवित्र हिमलिंग दर्शन के लिए लाखों लोग यहाँ आते हैं। गुफा की परिधि लगभग डेढ़ सौ फुट हैं और इसमें ऊपर से बर्फ सी पानी की बूंदे जगह – जगह टपकती रहती हैं। यही पर एक ऐसी जगह है, जिसमें टपकने वाली हिम बूंदों से लगभग 12–18 फुट लंबा शिवलिंग बनता है। ये बूंदे इतनी ठंडी होती हैं कि नीचे गिरते ही बर्फ का रूप लेकर ठोस हो जाती हैं। चन्द्रमा के घटने – बढ़ने के साथ – साथ इस बर्फ का आकार भी घटता – बढ़ता रहता है। श्रावण पूर्णिमा को यह अपने पूरे आकार में आ जाता है और अमावस्या तक धीरे – धीरे छोटा होता जाता है। आश्चर्य की बात यही है कि यह शिवलिंग ठोस बर्फ का बना होता है, जबकि गुफा में आमतौर पर कच्ची बर्फ ही होती है जो हाथ में लेते ही भुरभुरा जाए। मूल अमरनाथ शिवलिंग से कई फुट दूर गणेश, भैरव और पार्वती के वैसे ही अलग अलग हिमखंड हैं। गुफा में अमरकुंड का जल प्रसाद के रूप में ग्रहण किया जाता है। गुफा में टपकता बूंद–बूंद जल भक्तों के लिए शिव का आशीर्वाद होता है। इस हिम शिवलिंग को लेकर हर एक के मन में जिज्ञासावश प्रश्न उठता है कि आखिर इतनी ऊंचाई पर स्थित गुफा में इतना ऊंचा बर्फ का शिवलिंग कैसे बनता है। जिन प्राकृतिक स्थितियों में इस शिवलिंग का निर्माण होता है वह विज्ञान के तथ्यों से विपरीत है। यही बात सबसे ज्यादा अचंभित करती है। विज्ञान के अनुसार बर्फ को जमने के लिए करीब शून्य डिग्री तापमान जरुरी है। किंतु अमरनाथ यात्रा हर साल जून – जुलाई में शुरू होती है। तब इतना कम तापमान संभव नहीं होता। इस बारे में विज्ञान के तर्क है कि अमरनाथ गुफा के आसपास और उसकी दीवारों में मौजूद दरारे या छोटे–छोटे छिद्रों में से शीतल हवा की आवाजाही होती है। इससे गुफा में और उसके आस–पास बर्फ जमकर लिंग का आकार ले लेती है। किंतु इस तथ्य की कोई पुष्टि नहीं हुई है।

धर्म में आस्था रखने वाले मानते हैं कि ऐसा होने पर बहुत से शिवलिंग इस प्रकार बनने चाहिए। साथ ही इस गुफा में और शिवलिंग के आस–पास कच्ची बर्फ पाई जाती है, जो छूने पर बिखर जाती है। जबकि हिम शिवलिंग का निर्माण पक्की बर्फ से होता है। धर्म को मानने वालों के लिए यही अद्‌भूत बातें आस्था पैदा करती हैं। बर्फ से बनी शिवलिंग को लेकर एक मान्यता यह भी है कि इसकी ऊंचाई चंद्रमा की कलाओं के साथ घटती – बढ़ती है।

हालांकि पिछले कुछ वर्षों में बाबा अमरनाथ गुफा के दर्शन के लिए आने वाले श्रद्धालुओं की आस्थावश की गई भूलों से शिवलिंग पूरा आकार न ले सका, क्योंकि हर श्रद्धालु बाबा के दर्शन पाकर भाव–विभोर हो जाता है, जिससे वह शिवलिंग को छू कर, धूप, दीपक जलाकर अपनी श्रद्धा प्रकट करता है। संभवतः अधिक श्रद्धालुओं के गुफा में प्रवेश के कारण और उनके द्वारा दीपक या अगरबत्ती आदि जलाने से, तापमान के बढने को ही शिवलिंग के पूर्ण स्वरूप नहीं लेने का कारण माना गया। इसलिए अब अमरनाथ बोर्ड द्वारा भी भक्तों की आस्था को ध्यान में रखते हुए शिवलिंग के दूर से दर्शन और उपासना संबंधी सावधानियों के सख्त नियमों का पालन कराया जाता है। इस प्रकार बाबा अमरनाथ का यह दिव्य शिवलिंग जहां भक्तों की धर्म में आस्था को ऊंचाईयां देता है, वहीं विज्ञान को अचंभित करता है।

अमरनाथ यात्रा शिविर

जनश्रुतियां

जनश्रुति प्रचलित है कि इसी गुफा में माता पार्वती को भगवान शिव ने अमरकथा सुनाई थी, जिसे सुनकर सद्योजात शुक शिशु शुकदेव ऋषि के रूप में अमर हो गए। अमरनाथ कथा की मान्यता है कि सतयुग में एक बार देवी पार्वती ने शिव से प्रश्न किया कि आपके अमर होने की क्या कथा है? तथा अनुरोध किया कि वह मानव को अमरता प्रदान कराने वाला मंत्र उन्हें

सिखाएं। महादेव नहीं चाहते थे कि उस ज्ञान को कोई पार्वती के सिवा नश्वर प्राणी सुने, पर वह पार्वती का अनुरोध भी टाल नहीं सकते थे। इसके लिए उन्होंने अमरनाथ की गुफा को चुना, जहां कोई प्राणी न पहुंच सके। वहां उन्होंने पार्वती जी को सारी कथा सुनाई। पर कबूतर के दो अंडे, जो वहां पहले से विद्यमान थे, उस अमर मंत्र को सुनते सुनते वयस्क होकर अमरत्व पा गए। यह भी कहा जाता है कि ये महादेव के ही दो सेवक थे, जो वहां कुरु – कुरु कह कर शोर कर रहे थे, इसलिए शिव ने उन्हें कबूतर बन जाने का शाप दिया, किंतु मंत्र सुन लेने के कारण वे अमर भी हो गए। शिव भक्त मानते हैं कि आज भी गुफा में वे दोनों कबूतर दिखाई पड़ते हैं, जिन्हें श्रद्धालु अमर पक्षी बताते हैं। ऐसी भी मान्यता है कि जिन श्रद्धालुओं को कबूतरों का जोड़ा दिखाई देता है, उन्हें शिव पार्वती अपने प्रत्यक्ष दर्शनों से निहाल करके उस प्राणी को मुक्ति प्रदान करते हैं। यह भी माना जाता है कि भगवान शिव ने अर्द्धांगिनी पार्वती को इस गुफा में एक ऐसी कथा सुनाई थी, जिसमें अमरनाथ की यात्रा और उसके मार्ग में आने वाले अनेक स्थलों का वर्णन था। यह कथा कालांतर में अमरकथा नाम से विख्यात हुई।

कुछ विद्वानों का मत है कि भगवान शंकर जब पार्वती को अमर कथा सुनाने ले जा रहे थे, तो उन्होंने सर्वप्रथम बैल को छोड़ा वह स्थान बैलगाम, जो कालांतर में पहलगाम बन गया, छोटे–छोटे अनंत नागों को अनंतनाग में छोड़ा, माथे के चंदन को चंदनबाड़ी में उतारा, गंगाजी को पंचतरणी का नाम मिला, अन्य पिस्सुओं को पिस्सू टॉप पर और गले के शेषनाग को शेषनाग नामक स्थल पर छोड़ा था। ये तमाम स्थल अब भी अमरनाथ यात्रा में आते हैं। आश्चर्य की बात यह है कि अमरनाथ गुफा एक नहीं है। अमरावती नदी के पथ पर आगे बढ़ते समय और भी कई छोटी – बड़ी गुफाएं दिखती हैं। वे सभी बर्फ से ढकी हैं।

अमरनाथ यात्रा शिविर

अमरनाथ यात्रा का उद्‌गम

खोज से जुड़ी कथा – लोक मान्यता है कि भगवान शंकर की इस पवित्र गुफा की खोज का श्रेय एक गुज्जर यानि गड़रिये बुटा मलिक को जाता है। एक बार बुटा मलिक पशुओं को चराता हुआ ऊंची पहाड़ी पर निकल गया। वहां उसकी मुलाकात एक संत से हुई। उस संत ने गड़रिये को कोयले से भरा थैला दिया। वह थैला लेकर गड़रिया घर पहुंचा। जब उसने वह थैला खोला तो वह यह देखकर अचंभित हो गया कि उस थैले में भरे कोयले के टुकड़े सोने के सिक्कों में बदल गए। वह गड़रिया बहुत खुश हुआ। वह गड़रिया तुरंत ही उस दिव्य संत का आभार प्रकट करने के लिए उसी स्थान पर पहुंचा। लेकिन उसने वहां पर संत को न पाकर उस स्थान पर एक पवित्र गुफा और अद्‌भुत हिम शिवलिंग के दर्शन किए। जिसे देखकर वह अभिभूत हो गया। उसने पुनः गांव पहुंचकर यह सारी घटना गांव वालों को बताई। सभी ग्रामवासी उस गुफा और शिवलिंग के दर्शन के लिए वहां आए। माना जाता है कि तब से ही इस तीर्थयात्रा की परंपरा शुरू हो गई।

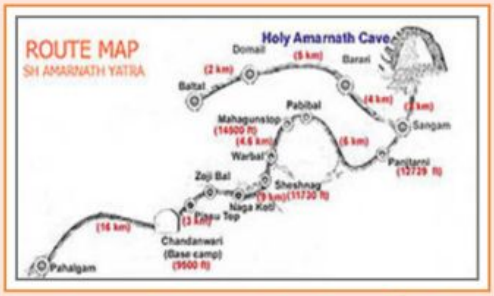

अमरनाथ यात्रा का मानचित्र

अमरनाथ यात्रा

अमरनाथ यात्रा को उत्तर भारत का सबसे पवित्र तीर्थयात्रा माना जाता है। यात्रा के दौरान भारत की विविध परंपराओं, धर्मों और संस्कृतियों की झलक देखी जा सकती है। अमरनाथ यात्रा में शिव भक्तों को कड़ी कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है। रास्ते उबड़ – खाबड़ है, रास्ते में कभी बर्फ गिरने लग जाती है, कभी बारिश होने लगती है तो कभी बर्फीली हवाएं चलने लगती है। फिर भी भक्तों की आस्था और भक्ति इतनी मजबूत होती है कि यह सारे कष्ट महसूस नहीं होते और बाबा अमरनाथ के दर्शन के लिए एक अदृश्य शक्ति से खिंचे चले आते हैं। यह माना जाता है कि अगर तीर्थयात्री इस यात्रा को सच्ची श्रद्धा से पूरा कर तो वह भगवान शिव के साक्षात दर्शन पा सकते हैं।

पहलगाम से अमरनाथ

अमरनाथ की गुफा तक पहुंचने के लिए तीर्थयात्री जम्मू से पहलगाम जाते हैं। सडक मार्ग से पहलगाम जम्मू से 365 किलोमीटर की दूरी पर है। यह विख्यात पर्यटन स्थल भी है और यह पर्वतों से घिरा क्षेत्र है और सुंदर प्राकृतिक दृश्यों के लिए विश्वप्रसिद्ध है। यह लिद्दर नदी के किनारे बसा है। पहलगाम तक जाने के लिए जम्मू कश्मीर पर्यटन केंद्र से सरकारी बस उपलब्ध रहती है। यदि आप श्रीनगर के हवाई अड्डे पर उतरते हैं, तो लगभग 96 कि.मी. की सडक – यात्रा कर पहलगाम पहुंच सकते हैं। पहलगाम में ठहरने के लिए सामाजिक – धार्मिक संगठनों की ओर से आवासीय व्यवस्था है। पहलगाम और गैर सरकारी संस्थाओं की ओर से लंगर की व्यवस्था की जाती है। पहलगाम से एक कि.मी. नीचे ही 'नुनवन' में यात्री बेस कैम्प पर पहला पड़ाव होता है। तीर्थयात्रियों की पैदल यात्रा यहीं से आरंभ होती है।

अमरनाथ जाने का रास्ता–

चंदनबाड़ी

पहलगाम के बाद पहला पड़ाव चंदनबाड़ी है, जो पहलगाम से 16 किलोमीटर की दूरी पर है। यह स्थान समुद्रतल से 9500 फीट की ऊंचाई पर स्थित है। पहली रात तीर्थयात्री यहीं बिताते हैं। यहां रात्रि निवास के लिए कैंप लगाए जाते हैं। इसके ठीक दूसरे दिन पिस्सु घाटी की चढ़ाई शुरू होती है। लिद्दर नदी के किनारे से इस पड़ाव की यात्रा आसान होती है। यह रास्ता वाहनों द्वारा भी पूरा किया जा सकता है। यहां से आगे जाने के लिए घोड़ों, पालकियों अथवा पिट्ठुओं की सुविधा मिल जाती है। चंदनबाड़ी से पिस्सु टॉप जाते हुए रास्ते में बर्फ का पुल आता है। यह घाटी सर्पाकार है।

पिस्सु टाप

चंदनवाड़ी से 3 किमी चढाई करने के बाद आपको रास्ते में पिस्सू टाप पहाडी मिलेगी। जनश्रुतियां हैं कि पिस्सु घाटी पर देवताओं और राक्षसों के बीच घमासान लड़ाई हुई, जिसमें देवताओं ने कई दानवों को मार गिराया था। दानवों के कंकाल एक ही स्थान पर एकत्रित होने के कारण यह पहाडी बन गई। अमरनाथ यात्रा में पिस्सु घाटी काफी जोखिम भरा स्थल है। पिस्सु घाटी समुद्रतल से 11,120 फुट की ऊंचाई पर है। लिद्दर नदी के किनारे – किनारे पहले चरण की यह यात्रा ज्यादा कठिन नहीं है। पिस्सु घाटी की सीधी चढ़ाई चढते हैं जो शेषनाग नदी के किनारे चलती है। 12 कि. मी. का लम्बा नदी का किनारा शेषनाग झील पर जाकर समाप्त होता है। यही तो नदी का उद्गम स्थल है। (यही नदी पहलगाम से नीचे जाकर झेलम दरिया में मिल जाती है)

शेषनाग

पिस्सु टाप से 12 कि.मी. दूर 11,730 फीट की ऊंचाई पर शेषनाग पर्वत है, जिसके सातों शिखर शेषनाग के समान लगते हैं। यह मार्ग खड़ी चढ़ाई वाला और खतरनाक है। यहां तक की यात्रा तय करने में 4–5 घंटे लगते हैं। यहीं पर पिस्सु घाटी के दर्शन होते हैं। यात्री शेषनाग पहुंच कर तंबू कैंप लगाकर अपना दूसरा पडाव डालते हैं। यहां पर्वतमालाओं के बीच नीले

पानी की खूबसूरत झील है। जिसे शेषनाग झील कहते हैं। इस झील में झांक कर यह भ्रम हो उठता है कि कहीं आसमान तो इस झील में नहीं उतर आया। यह झील करीब डेढ़ किलोमीटर लंबाई में फैली है। किंवदंतियों के मुताबिक शेषनाग झील में शेषनाग का वास है और चौबीस घंटों के अंदर शेषनाग एक बार झील के बाहर दर्शन देते हैं, लेकिन यह दर्शन खुशनसीबों को ही नसीब होता है। तीर्थयात्री यहां रात्रि विश्राम करते है और यहीं से तीसरे दिन की यात्रा शुरू करते हैं। शेषनाग और इससे आगे की यात्रा बहुत कठिन है। यहां बर्फीली हवाएं चलती रहती हैं। शेषनाग से पोषपत्री तथा फिर पंचतरणी की दूरी छह किलोमीटर है। पोषपत्री नामक यह स्थान 12500 फीट की ऊंचाई पर स्थित है। पोषपत्री में विशाल भंडारे का आयोजन होता है। यहां भोजन, आवास, चिकित्सा सुविधा, ऑक्सीजन सलैंडर आदि की सुविधा उपलब्ध रहती है।

पंचतरणी

शेषनाग से पंचतरणी आठ मील के फासले पर है। मार्ग में बैववैल टॉप और महागुणास दर्रे को पार करना पड़ता है, जिनकी समुद्र तल से ऊंचाई क्रमशः 13,500 फुट व 14,500 फुट है। इस स्थान पर अनेक झरनें, जल प्रपात और चश्में और मनोरम प्राकृतिक दृश्य दिखाई देते हैं। महागुणास चोटी से नीचे उतरते हुए 9.4 कि.मी. की दूरी तय करके पंचतरिणी पहुंचा जा सकता है। यहां पांच छोटी छोटी सरिताएं बहने के कारण ही इस स्थल का नाम पंचतरणी पड़ा है। पंचतरणी 12,500 फीट की ऊँचाई पर स्थित है। यह भैरव पर्वत की तलहटी में बसा है। यह स्थान चारों तरफ से पहाड़ों की ऊंची ऊंची चोटियों से ढका है। ऊंचाई की वजह से ठंड भी ज्यादा होती है। आक्सीजन की कमी की वजह से तीर्थयात्रियों को यहां सुरक्षा के इंतजाम करने पड़ते हैं। आगे की यात्रा में भैरव पर्वत मिलता है। इसकी तलहटी में पंचतरिणी नदी है, जहां से पांच धाराएं निकलती हैं। मान्यता है कि पांचों धाराओं की उत्पत्ति शिवजी की जटाओं से हुई है। श्री अमरनाथ के दर्शन से पूर्व का यह तीसरा और अंतिम पडाव है। पंचतरिणी से 3 कि.मी. चलने पर अमरगंगा और पंचतरिणी का संगम स्थल मिलता है। यहां से श्री अमरनाथ की पवित्र गुफा लगभग 3 कि.मी. दूर है और रास्ते में बर्फ ही बर्फ जमी रहती है। अमरगंगा एक बर्फ की पतली सी धारा है, इसी में स्नान करके भक्त जन हाथ में नारियल आदि का चढावा ले श्री अमरनाथ जी के दर्शन करते हैं । इसमें पहले 3 कि.मी. के रास्ते को 'संत सिंग की पौड़ी' कहते हैं यह ऐसी पगडंडी नुमा रास्ता है, जिसके एक ओर पहाड़ व दूसरी ओर गहरी खाई है। यह रास्ता भी काफी जोखिम भरा है। हिम नदी को पार करते ही मुख्य गुफा के दर्शन होते हैं। इसी दिन गुफा के नजदीक पहुंच कर पड़ाव डाल रात बिता सकते हैं और दूसरे दिन सुबह पूजा अर्चना कर पंचतरणी लौटा जा सकता है। कुछ यात्री शाम तक शेषनाग तक वापस पहुंच जाते हैं। यह रास्ता काफी कठिन है, लेकिन अमरनाथ की पवित्र गुफा में पहुंचते ही सफर की सारी थकान पल भर में छू–मंतर हो जाती है और अद्भुत आत्मिक आनंद की अनुभूति होती है।

समुद्र तल से लगभग 13,000 फीट की ऊंचाई पर स्थित इस गुफा में प्रवेश करने पर हम हिम बर्फ से बने शिवलिंग का दर्शन करते हैं। इसके अलावा, हमें बर्फ की बनी दो और आकृति दिखाई देती है, जिन्हें पार्वती और गणपति का स्वरूप माना जाता है। गुफा में बूंद–बूंद करके जल टपकता रहता है। ऐसी मान्यता है कि गुफा के ऊपर पर्वत पर श्री राम कुंड है। इसी का जल गुफा में टपकता रहता है। कुछ विद्वान गुफा में पार्वती की मूर्ति को साक्षात् जगदम्बा का स्वरूप मानते हैं और इस स्थान को शक्तिपीठ के रूप में मान्यता देते हैं। पवित्र गुफा में वन्य कबूतर भी दिखाई देते हैं, जिनकी संख्या समय – समय पर बदलती रहती है। सफेद कबूतर के जोडे को देखकर तीर्थयात्री अमरनाथ की कथा को याद कर रोमांचित हो उठते हैं।

बलटाल से अमरनाथ

जम्मू से बलटाल की दूरी 400 किलोमीटर है। यह मार्ग थोड़ा कठिन है, इस रास्ते में जोखिम भी ज्यादा हैं। इस मार्ग की लंबाई 18 किलोमीटर है। जम्मू से उधमपुर के रास्ते बलटाल के लिए जम्मू कश्मीर पर्यटक स्वागत केंद्र की बसें आसानी से मिल जाती है। बलटाल कैंप से तीर्थयात्री एक दिन में अमरनाथ गुफा की यात्रा कर वापस कैंप लौट सकते हैं। वापसी में बालटाल होकर श्रीनगर की सुंदर वादियों का आनंद लिया जा सकता है। बालटाल से पवित्र गुफा तक हेलिकॉप्टर द्वारा भी पहुंचा जा सकता है। अमरनाथ यात्रा का मार्ग चाहे कठिन और जोखिम भरा हो, लेकिन यह रास्ता प्राकृतिक दृश्यों से भरपूर है। यह यात्रा करके निश्चित रूप से हम भगवान शिव की महिमा से अभिभूत हो जाते हैं।

दर्शन का समय

पूर्णमासी सामान्यतः भगवान शिव से संबंधित नहीं है, लेकिन बर्फ के पूरी तरह विकसित शिवलिंग के दर्शन के कारण श्रावण पूर्णमासी (जुलाई – अगस्त) का अमरनाथ यात्रा के साथ संबंध है और पर्वतों से गुजरते हुए गुफा तक पहुंचने के लिए इस अवधि के दौरान मौसम काफी हद तक अनुकूल रहता है। इसलिए बाबा अमरनाथ के दर्शन के लिए तीर्थयात्री अमूमन मध्य जून, जुलाई और अगस्त (आषाढ पूर्णिमा से शुरू होकर रक्षा बंधन तक पूरे सावन महीने) में आते हैं। जुलाई–अगस्त माह में मॉनसून के आगमन के दौरान पूरी कश्मीर वादी में हर तरफ हरियाली ही हरियाली दिखती है। यह हरियाली यहां की प्राकृतिक सुंदरता में चार चांद लगाती है। यात्रा के शुरू और बंद होने की घोषणा श्री अमरनाथ श्राइन बोर्ड करती है। इस यात्रा के साथ मात्र हिन्दुओं की ही नहीं बल्कि मुस्लिम और अन्य धर्म के श्रद्धालुओं की भी आस्था जुड़ी है।

छड़ी मुबारक

रक्षाबंधन के दिन पवित्र अमरनाथ धाम में भगवान शिव का विधिवत पूजन कश्मीर के साधु समाज के प्रमुख और गुफा के मुख्य पुजारी करते हैं। कुछ वर्ष पहले तक साधुओं की टोली के साथ यात्रा की प्रतीक छड़ी मुबारक को श्रीनगर से बिजबेहरा, पहलगाम, चंदनबाड़ी, शेषनाग, पंजतरणी के रास्ते से अमरनाथ लाया जाता था। पर अब छड़ी मुबारक की यह यात्रा जम्मू से शुरू होकर परंपरागत मार्ग से होते हुए सीधे पहलगाम तक होती है। इस मार्ग पर आम यात्री राज्य परिवहन की बसों द्वारा एक दिन में जम्मू से 270 किलोमीटर ऊपर नुनवान कैंप (पहलगाम) में पहुंच जाते हैं। उससे आगे 16 किलोमीटर चंदनबाड़ी तक का सफर टैक्सियों और स्थानीय मिनी बसों द्वारा होता है। आगे चंदनबाड़ी से अमरनाथ तक 32 किलोमीटर पैदल जाने और उतना ही पैदल आने का सफर चार दिनों में तय होता है।

यात्रियों की सुविधा के लिए जम्मू – कश्मीर सरकार का पर्यटन विभाग आरक्षण आदि की व्यवस्था भी करता है। रात्रि विश्राम के लिए टैंट, बिस्तर, फोन इत्यादि की भी अच्छी व्यवस्था है। इस पवित्र क्षेत्र में तरह–तरह की उपयोगी जड़ी बूटियां बहुतायत में उगती हैं।

मोबाइल सेवा का शुभारंभ

भारत सरकार ने पवित्र अमरनाथ गुफा पर भारत संचार निगम लिमिटेड (बीएसएनएल) की मोबाइल सेवा का अधिकारिक तौर पर शुभारंभ किया। बीएसएनएल ने 13,500 फुट ऊंचाई पर स्थित पवित्र गुफा पर मोबाइल सेवा शुरू करने के लिए बालटाल, नुनवान, लाकीपोरा, बेताब घाटी, संगम पवित्र गुफा, पंजतरणी, चंदनवाडी व चंदनवाडी बेस कैंप में कुल 11 टावर लगाए हैं। इससे वार्षिक अमरनाथ यात्रा पर आने वाले 4–5 लाख से अधिक श्रद्धालुओं को लाभ होगा और वे यात्रा के दौरान अपने घर पर परिवार के साथ लगातार संपर्क में रह सकेंगे।

विजय कुमार, भा.र.ले.से.
एकीकृत वित्तीय सलाहकार
मध्य कमान , लखनऊ

राजभाषा हिन्दी दशा एवं दिशा

वर्तमान परिदृश्य में अंग्रेजी निःसंदेह एक महत्वपूर्ण स्थान पा चुकी है। उसने हिंदी को दोयम दर्जे की स्थिति पर लाकर खड़ा कर दिया है। स्थिति यह हो चुकी है कि यदि आप किसी से कहें कि आप हिंदी विषय से स्नातक या परास्नातक की पढ़ाई कर रहे हैं तो आपको ऐसी दृष्टि से देखा जाएगा मानो आप सभ्यता से असभ्यता की ओर अग्रसर हो रहे हैं या आपका बौद्धिक स्तर उच्च शिक्षा प्राप्त करने योग्य नहीं हैं । स्थिति बिल्कुल साफ है कि आज अंग्रेजी की जितनी व्यापक पहुँच और बौद्धिक दबदबा है उतना हिंदी का नहीं या यूँ कहें कि किसी भी भारतीय भाषा का नहीं है ।

इस लेख के माध्यम से मैं हिंदी बनाम अंग्रेजी की बात न रखकर भारतीय भाषाएं बनाम अंग्रेजी पर प्रकाश डालने का प्रयास करूँगा । 2001 की जनगणना के अनुसार भारत में प्रथम भाषा के रूप में अंग्रेजी का प्रयोग करने वालों की कुल संख्या 2,26,499 है । लगभग 125 करोड़ की आबादी वाले देश में सवा दो लाख लोगों की जो भाषा है वह अन्य भारतीय भाषाओं पर राज करे, इस वर्चस्व की संस्कृति को समझने की जरूरत है । यहॉ जब अंग्रेजों का राज था तो अंग्रेजी ही सरकारी भाषा थी। देश जब आजाद हुआ तो लोगों की यह उम्मीद बनी थी कि कोई देशी भाषा ही अपने सरकार की भाषा होगी । लेकिन पिछले 67 सालों का इतिहास इस बात का गवाह है कि देशी शासक वर्ग ने अंग्रेजी के लिए मार्ग प्रशस्त किया ।

1963 की राजभाषा अधिनियम को यदि ठीक से लागू किया गया होता तो हिंदी विरोध की हवा बहुत पहले ही निकल गयी होती । उस अधिनियम के अनुसार मातृभाषा के अलावा दो और भाषाओं को पढ़ाने का प्रावधान था । उत्तर में दक्षिण और पूरब की भाषाएं और दक्षिण में उत्तर और पूरब की भाषाएं । यह होता तो देश भर में भाषा के संदर्भ में समरस राष्ट्रीय माहौल होता । राधा कृष्णन कमीशन रिपोर्ट 1949 ने सिफारिश की थी कि हिंदी के साथ राष्ट्र की क्षेत्रीय भाषाओं का विकास किया जाएगा और 15 साल के भीतर क्षेत्रीय जातीय भाषाओं में पाठ्य पुस्तके तैयार की जाएंगी, विज्ञान की किताबें बनेंगी, यहॉ तक कि ये भाषाएं अन्य शिक्षा का माध्यम बनेंगी । इन लक्ष्यों में एक बड़ा लक्ष्य सभी राष्ट्रीय भाषाओं को उच्च शिक्षा का माध्यम बनाना है । इस पर चर्चा बार–2 होती है पर यह कार्य कभी न किया जा सका । 2007 में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के एक फैसले के तहत यह तय हुआ कि हिंदी में ज्ञान विज्ञान के विषयों पर मौलिक पुस्तकें उन हिंदी विद्वानों से लिखाई जाएं जो अंग्रेजी में लिखते हैं । केंद्रीय हिंदी संस्थान के तत्कालीन निदेशक श्री शम्भूनाथ इस फैसले की प्रक्रिया से जुड़े थे अतः उन्होने एक आरम्भिक कार्य योजना बनवाकर भेजी । उन्होने यह सलाह दी कि देश के कुछ विश्वविद्यालयों में इसके लिए एक सेल बनाकर कार्य आरंभ किया जा सकता है और हिंदी में प्रबंधन, इंजीनियरिंग, तकनीकि, समाजविज्ञान,चिकित्सा विज्ञान आदि की मौलिक किताबें तैयार की जा सकती हैं । इसमें हिंदीतर विद्वान भी सुझाव के लिए रखे जाएं। लेकिन यह मामला ठंडे बस्ते में चला गया । किसी भाषा की समृद्धि का एक अच्छा लक्षण है उसका विश्वकोश । लेकिन विडंबना यह है कि हम अपनी भाषा के समृद्ध विश्वकोश का उपयोग नहीं कर पाये ।

आजादी के 67 साल बाद भी हिंदी और दूसरी भारतीय भाषाओं का सशक्तिकरण नहीं हुआ है । सिर्फ बौद्धिक आवाजों को दबाए रखने के लिए साहित्य की सरकारी अकादमियॉ और संस्थान बने हुए हैं । पुरस्कार लो, शांत रहो । आत्मविमुग्ध और कूपमंडुक बने रहो । भारत के अलावा शायद ही कोई ऐसा देश होगा जिसकी कोई राष्ट्रीय भाषा नहीं होगी । पाकिस्तान , श्रीलंका ,बांग्लादेश, नेपाल सबकी एक राष्ट्र भाषा है ,फिर भारत इस मामले में इतना विपन्न क्यों ?

जो लोग राष्ट्र भाषा के प्रश्न पर हिंदी बनाम अन्य भारतीय भाषाओं का राग अलापते हैं उन्हे यह पता होना चाहिए कि राष्ट्र भाषा के स्वरूप में हिंदी की कल्पना करने वाले मुख्यतः गैरहिंदी भाषी थे । राष्ट्र भाषा की जगह एक हिंदी ही ले सकती है, कोई दूसरी भाषा नहीं। जवाहर लाल नेहरु, जिनके लिए अंग्रेजी मातृभाषा जैसी थी और जो स्वयं कश्मीरी थे, ने कहा– 'राष्ट्र भाषा के रूप में हिंदी हमारे देश की एकता में सबसे अधिक सहायक सिद्ध होगी, इसमें दो राय नहीं । केशव चंद्र सेन,(बंग्ला भाषी)– 'हिंदी को भारत की एक भाषा स्वीकार कर ली जाए तो सहज में ही एकता सम्पन्न हो सकती है । लोकमान्य तिलक (मराठी भाषी)–राष्ट्र की एकीकरण के लिए सर्वमान्य भाषा से अधिक बलशाली कोई तत्त्व नहीं । मेरे विचार में हिंदी ही ऐसी भाषा है । राजा राम मोहन राय (बंग्ला भाषी) – 'हिंदी में अखिल भारतीय भाषा बनने की क्षमता है । डाक्टर गियर्सन (भाषा वैज्ञानिक)– 'हिंदी ही एक भाषा है जो भारत में सर्वत्र बोली और समझी जाती है । चक्रवर्ती राजगोपालाचारी (तमिल भाषी)– हिंदी का श्रृंगार राष्ट्र के सभी भागों के लोगों ने किया है । वह हमारी राष्ट्र भाषा है । हिंदी का जन्म आजाद ,राष्ट्रीय और लोकतांत्रिक मानसिकता की देन है । हिंदी मानसिक आजादी की भाषा है । जिस महाराष्ट्र में हिंदी भाषी लोगों के विरुद्ध बीच–बीच में कट्टरवादी नेता घृणा फैलाते रहते हैं, वहीं 60 से ज्यादा भक्त कवियों ने हिंदी में रचनाएं लिखी हैं । दक्षिण से रामानंद उत्तर आये थे । स्वाधीनता आंदोलन के दिनों में उपनिवेशवाद से लड़ते हुए हिंदीतर नेताओं ने राष्ट्रीय होने के लिए हिंदी का रास्ता चुना था । जो लोग इस बात की दुहाई देते हैं कि भारत एक बहुभाषी देश है और अंग्रेजी उन्हे जोड़े रखने का काम करती है तो प्रश्न यह है कि यह काम अंग्रेजी के बजाय अपने ही देश की भाषा हिंदी क्यों नहीं कर सकती है । डॉ. राम मनोहर लोहिया इसे अच्छी तरह समझते थे, इसीलिए उन्होने कहा था कि– 'देशी भाषाओं में कोई आपसी झगडा नहीं है। नकली झगडे को खत्म करो। बिना खत्म किये सुधार हो ही नहीं सकता। हिंदी का झगड़ा भारत की अन्य भाषाओं तमिल, तेलगू आदि से नहीं बल्कि अंग्रेजी से है । इसको फौरन स्कूल , न्यायालय आदि से हटा देना चाहिए। पुराने लोग, लोग हिंदी को नुकसान पहुँचा रहे हैं । हिंदी का पेट बड़ा होना चाहिए । उसमें तमिल, तेलगू आदि भाषाओं के शब्दो को प्रवेश मिलना चाहिए । ऐसा करने पर हिंदी देश और लोक की भाषा बनकर रहेगी'। साठ के दशक में राम मनोहर लोहिया ने 'अंग्रेजी हटाओ हिंदी लाओ के नारे के साथ आजाद भारत में भारतीय भाषाओं के हक की लड़ाई की अगुआई की । 9 सितंबर 1962 में हैदराबाद से समाजवादी राजनीति के पुरोधा डॉ. लोहिया ने कहा था कि 'अंग्रेजी हटाओ का मतलब हिंदी लाओ नहीं होता , बल्कि अंग्रेजी हटाओ का मतलब है कि तमिल, बांग्ला या दूसरी भाषाओं की प्रतिष्ठा ।

वस्तुत : हिंदी तथा अन्य भारतीय भाषाओं में कभी भी शत्रुता रही ही नहीं । यह शत्रुता अंग्रेजों द्वारा चित्रित किया गया । अंग्रेजी ने भाषाओं के बीच तनाव या विवाद रोकने का तर्क देकर ही अपना विस्तार किया है । यह ठीक उसी तरह से है जैसे अंग्रेज कहते थे कि वे भारत में रहेंगे तभी भारत एकजुट रह पाएगा । इसी तर्क के विरोध में कभी हिंदी के उत्कृष्ट साहित्यकार हजारी प्रसाद द्विवेदी ने कहा था कि अगर अंग्रेजी भारतीय एकजुटता का आधार है तो अंग्रेजो को भी वापस भारत बुला लो । गौर करने वाली बात यह है कि जब बिना अंग्रेजी बोले या उसका इस्तेमाल किए चीन ,जापान, रूस या जर्मनी जैसे देश आधुनिक हो सकते हैं तो यह कहना कहाँ तक

तर्कसंगत है कि बिना अंग्रेजी के भारत पिछड़ जाएगा। बिना अंग्रेजी बोले या उसका इस्तेमाल किए बगैर फेनन ,देरिदा, फुको,थॉमस पिकेटी अपनी–अपनी भाषा में पुस्तके लिख सकते हैं और दुनिया को प्रभावित कर सकते हैं तो भारत के बुद्धिजीवी केवल अंग्रेजी में लिखकर अपनी श्रेष्ठता का ढोंग रचने में क्यों लगे हैं ?

प्रसिद्ध शिक्षाविद् कृष्ण कुमार ने लिखा है, 'दिल्ली क्या भोपाल और लखनऊ जैसे शहरों में यदि आप साफ सुथरी हिंदी बोलते पाए जाएं तो लोग खासकर युवा लोग कह उठते हैं आप हिंदी बड़ी अच्छी बोल लेते हैं । ऐसी प्रशंसा का पात्र बनने का मौका मिलने पर मेरा दिल ग्लानि से भर जाता है और मैं धृष्टतापूर्वक यह सवाल कर बैठता हूँ– कि ' क्या आप किसी फ्रेंच भाषी से कहेंगे कि वह फ्रेंच बहुत अच्छी बोल लेता है । आज आवश्यकता यह है कि हिंदी को अनुवाद की भाषा की श्रेणी से बाहर निकाला जाय। हिंदी को मौलिक लेखन की भाषा बनायी जाए । क्योंकि जो भाषा केवल अनुवाद की भाषा बन जाती है वह भाषा स्वतः ही सम्मान योग्य नहीं समझी जाती है और दूसरे दर्जे के नागरिक की श्रेणी में धकेल दी जाती है ।

एक भाषा के रूप में अंग्रेजी के विरोध का कोई अर्थ नहीं है । बल्कि ज्ञान की भाषा के रूप में अंग्रेजी का कद्र होना चाहिए । लेकिन सवाल यह है कि सिर्फ अंग्रेजी का ही कद्र क्यों , फारसी और संस्कृत का क्यों नहीं । अंग्रेजों के आने के पूर्व यहॉ फारसी और संस्कृत साथ–साथ पढ़ाई जाती थी । तब के विद्वानों ने वेदों का अनुवाद फारसी में किया था । फारसी जन–गण की भाषा थी । बिडंबना यह है कि वह फारसी अब भारतीय भाषा नहीं रही जबकि अंग्रेजी राजभाषा अधिनियम के अनुसार भारतीय भाषाओं में से एक है । दरअसल भाषा और संस्कृति जिसने जीत ली उसने देश जीत लिया । यह बात अंग्रेज अच्छी तरह समझते थे । इसीलिए उन्होने अपने शासन से ज्यादा अपनी भाषा को जमाया, यही कारण है कि आज भी अंग्रेजी उखड़ नहीं रही है ।

एक बार भगत सिंह ने कहा था कि हमें देश की आजादी और भाषा की आजादी में से एक चुनना पड़ा तो मैं भाषा की आजादी चुनूँगा क्योंकि भाषा यदि आजाद हो गयी तो देश आजाद होगा ही, और भाषा गुलाम ही रहे तो फिर देश के आजाद होने का कोई अर्थ नहीं है । दरअसल अपनी भाषा गवाँकर हमने एक अर्थहीन आजादी हासिल की है । इस आजादी से हम भगत सिंह की आत्मा को चोट ही पहुँचा रहे हैं ।

रमेश सिंह
कनिष्ठ अनुवादक
काः क्षे.प्र.के., लखनऊ

''राष्ट्रभाषा के बिना राष्ट्र गूंगा है। मेरा यह मत है कि हिंदी ही हिंदुस्तान की राष्ट्रभाषा हो सकती है और होनी चाहिए''। महात्मा गाँधी

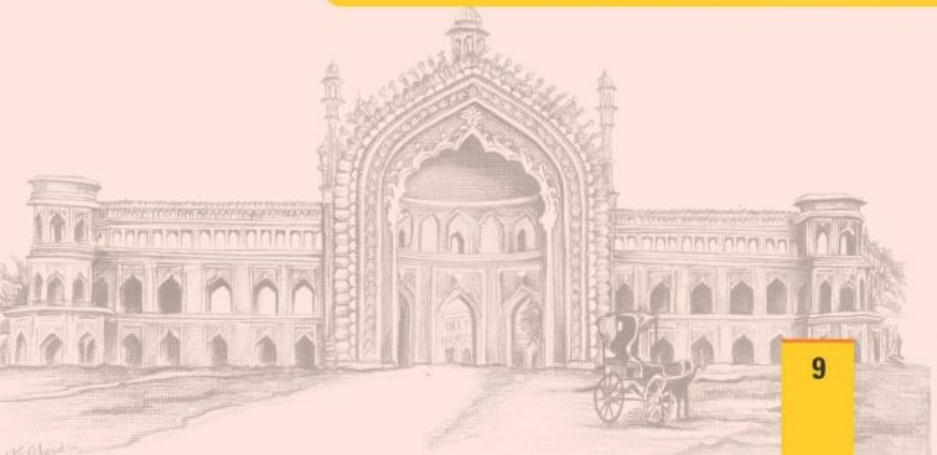

हत्यारा

वह लगभग पैंसठ साल का बूढ़ा था तथा पॉच– छरू दिन से भूखा था । दाढ़ी बढ़ी हुई थी । शरीर जर्जर हो रहा था । हाथों में हथकड़ी थी । जेल की एक बैरक में वह भावहीन स्थिति में बैठा हुआ था । यदि आज ईश्वर उससे वरदान मांगने को कहता तो वह सिर्फ मौत की मांग करता ।

किंतु मौत भी अब उसके बस में न थी । क्या विवशता है । उसे अपना वह छोटा सा गाँव याद आता है जहाँ भूख तथा गरीबी तो थी पर अपनापन भी था। वहाँ आधे पेट भोजन करना तथा अपनी रोटी दूसरों को दे देने का संस्कार था ।

उसे याद आता है कि वह आठवीं से आगे नहीं पढ़ सका था क्योंकि उससे आगे पढ़ने के लिए उसके बाप के पास पैसे ही नहीं थे। अतः गाँव के सेठ के यहाँ वह मुनीमगीरी करने लगा। गाँव में ही उसकी शादी हो गयी तथा उसे एक बेटा हुआ । दूसरे बच्चे को जन्म देते समय इलाज के अभाव तथा सही देखभाल न होने के कारण उसकी पत्नी तथा बच्चा मृत्यु को प्राप्त हो गये । अतः उनके पास सिर्फ मन बहलाने के लिए उनका दो साल का बेटा था । सेठ उसकी मेहनत तथा ईमानदारी से प्रभावित हुआ और उसे अपने एक रिश्तेदार जो कि शहर में रहते थे, उनके यहाँ काम करने भेज दिया ।

शहर में आकर वह यहाँ की चका चौंध, यहाँ के रहने के तरीके से बहुत प्रभावित हुआ । उसके मन में भी एक बड़ा आदमी,एक पैसे वाला आदमी, एक इज़्जतदार आदमी बनने की इच्छा होने लगी ।

अपने अनुभब से वह यह बात तो समझ गया था कि शिक्षा ही एक ऐसी चीज है जो गरीब को अमीर बना सकती है और उसने यह तय किया कि वह कठिन मेहनत करेगा, अपना सब कुछ लगा देगा और अपने बेटे को पढ़ा लिखा कर अफसर बनायेगा ।

उसकी इस कल्पना ने उसे जीने की राह दी । अतः वह काम के अलावा सारा दिन अपने बेटे के बारे में सोचता रहता था । उसकी छोटी–छोटी बातों तथा चीजों का ध्यान रखता । उसे स्कूल छोड़कर आता । उसके लिए तरह तरह की किताबें खरीदता । उसे उत्साहित करता । वह अपने बेटे में इतना मगन रहता कि उसकी दुनिया उसके बेटे में ही सिमट कर रह गई । अपने बेटे के हर कष्ट तथा दर्द को अपना दर्द तथा उसकी खुशी को अपनी खुशी समझता था । उसकी मेहनत रंग लाई और उसके बेटे ने आई. ए. एस. की परीक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त किया । वह खुशी से झूम रहा था । उसके बेटे ने उससे कहा कि इस खुशी के अवसर पर मैं आपसे दो वचन मांगना चाहता हूँ – ना तो नहीं करोगे? भला जो उसके जीने का मकसद हो , वह उसे ना कैसे कह सकता था । उसके बेटे ने कहा कि उसकी एक सहपाठी है जो आई. ए. एस. की बेटी है और वह उससे शादी करना चाहता है। दूसरा यह कि उसे यह अहसास है कि उसको यहाँ तक पहुँचाने के लिए उनके पिता ने क्या कुर्बानी दी है इसलिए वह चाहता है कि उसके पिता उसके साथ रहें और कभी भी उसको छोड़कर न जायें ।

आप जिसे प्यार करते हैं, उसके विरुद्ध जाने का प्रश्न ही नहीं होता । उसने अपने बेटे की दोनों बातें मान ली । बस यहीं से उसके बुरे दिन शुरू हो गए । उसके बेटे की पत्नी उससे कहती थी कि तुम हमारी सोसाइटी के लायक नहीं हो और गाँव चले जाओ। जब भी वह गाँव जाने के लिए कहता, उसका बेटा उसे रोक लेता । बहू के तिरस्कारों के बावजूद वह बेटे के साथ रह रहा था क्योंकि वह अपने बेटे को सुखी देखना चाहता था ।

अभी पाँच दिन पूर्व उसका बेटा सरकारी दौरे पर शहर से बाहर गया हुआ था । उसकी पत्नी बहुत गुस्से से बोली कि मैंने तुझको कई बार कहा है कि गाँव चला जा। मगर तू सुनता नहीं । अब इस घर में या तो मैं रहूँगी या तू । मैं अभी अपने शरीर पर मिट्टी का तेल डालकर आग लगा लेती हूँ । वह उससे अनुनय विनय करता रहा कि मेरे बेटे को आने दे। एक बार मिलकर मैं गॉव चला जाउँगा और फिर कभी नहीं आऊँगा । मगर यह क्या, वह हतप्रभ रह गया । उसकी बहू ने अपने शरीर में आग लगा ली थी ।

वह चीखा –चिल्लाया । मुहल्ले वाले आये और उसे अस्पताल लेकर गये तथा डॉक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया । पुलिस ने उसे अपनी बहू की हत्या में गिरफ्तार कर लिया । किसी ने यह जानने कि कोशिश भी नहीं कि एक 61 साल का बूढ़ा आदमी 30 वर्ष की जवान लड़की को कैसे और क्यों जला सकता है ?

वह अपने इन्हीं विचारों में खोया था कि अचानक किसी ने उसका कंधा झकझोरा । वह जेल का सिपाही था । उसने कहा कि तुमसे मिलने कोई आया है । सामने देखा तो उसका बेटा बैठा था । उसकी आँखों से आँसू बह रहे थे । किंतु आज उसके हाथ अपने बेटे के आँसू पोछने के लिए उठ न सके ।

अशोक कुमार
वरिष्ठ लेखाधिकारी
का0 रक्षा लेखा प्रधान नियंत्रक
(मध्य कमान) लखनऊ

"जो कोई व्यक्ति विकास के लिए खड़ा है उसे हर एक रूढविादी चीज की आलोचना करनी होगी, उसमे अविश्वास करना होगा तथा उसे चुनौती देनी होगी "– भगत सिंह

नाम

उसका शरीर साथ नहीं दे रहा था । घुटनों में बहुत दर्द रहता था । ऑखों से धुँधला दिखाई देता था । चलने पर सांस फूल जाती थी और पैरों में सूजन आ जाती थी । अपने दैनिक कार्य बहुत मुश्किल से कर पाती थी । अब वह बूढ़ी हो चली थी। हो भी क्यों न, उसकी उम्र सत्तर के पार हो गयी थी । मोहल्ले की एक दो औरतें कभी–कभी उसका हाल चाल पूछने आ जाती थी। बच्चों के खेलने की हंसी, पक्षियों के चहकने की आवाज तथा पड़ोस से आती अस्पष्ट आवाजें ही उसके जीने का सहारा थी । उसे पता ही नहीं था कि कब दिन निकलता है और कब रात होती है । वह एक नदी की तरह बिना किसी प्रयोजन बिना किसी लक्ष्य के जिए जा रही थी ।

किसी ने दरवाजा खटखटाया । बड़ी मुश्किल से उठकर उसने दरवाजा खोला । गाँव का एक बच्चा उससे कह रहा था "दादी, प्रधान के यहाँ वृद्धावस्था पेंशन बन रही है । आप जाकर बनवा लो"। इच्छा न होते हुए भी वह प्रधान के यहाँ जाने को तैयार हो जाती है ।

प्रधान के यहाँ बहुत भीड़ थी । उस भीड़ को देखकर उसे एहसास हुआ कि वह अकेली दुखियारी नहीं है । दरअसल अपने में व्यस्त रहने की वजह से दूसरों के दुखों, उनके दर्द, उनकी खुशी को वह महसूस ही नहीं कर पायी ।

अचानक पेंशन बनाने वाले बाबू ने उसके समीप जाकर पूछा "दादी आपका नाम क्या है ?" वह अचेतना से जागी । उसका नाम क्या था उसे याद ही नहीं आया । दरअसल उसे अपने जिंदगी के इतने लम्बे समय से उसे अपने नाम की कभी जरूरत ही नहीं पड़ी । उसे कभी किसी ने उसके नाम से पुकारा ही नहीं । अब जीवन के अंतिम पड़ाव में वह अपना नाम कैसे याद करे। अपना नाम कहाँ से लाये। जैसे काफी लम्बे समय तक शरीर का कोई भाग उपयोग में न लाया जाय तो वह भाग निर्जीव तथा बेकार हो जाता है। ठीक वैसा ही उसके नाम के साथ हुआ ।

अपने नाम को याद करने की जद्दोजहद में उसने दिमाग पर जोर देने का प्रयास किया। काफी कुदेरने पर उसे एक डरी और सहमी हुई लड़की की शक्ल याद आती है जो अपने पिता की गोद में बैठना चाहती है, जो घर में खिल खिला कर हँसना चाहती है, जो पक्षियों की तरह उड़ना चाहती है, पक्षियों की तरह चहकना चाहती है, पक्षियों की तरह तैरना चाहती है । किंतु यह क्या, जब वह निकलती है तो उसकी दादी की भौं तन जाती है । बाप का चेहरा गुस्से से लाल हो जाता है और माँ सहम जाती है । कुछ और बड़ा होने पर उसकी समझ में आया कि घर में उसे कोई पसंद नहीं करता है । लोग उसे 'बोझ' और 'पराई' और 'दूसरे के घर की' जैसे शब्दों से पुकारते हैं । वह इन शब्दों का अर्थ ढूढ़ने के लिए रात–रात भर सो नहीं पाती थी । किंतु ढूढ़ नहीं पाती थी ।

उसे हल्का सा याद आता है कि माँ ने एक दिन सहमें हुए से शब्दों में पिता से कहा था कि हमें बच्ची को स्कूल भेजना चाहिए । माँ के इन शब्दों के कहने से घर में भूचाल आ गया था । पिताजी ने चीख कर कहा था कि "पढ़ लिखकर तेरी बेटी कौन सी कलक्टर बन जाएगी । घर में खाने को नहीं है । और तुझे बेटी की पढ़ाई की सूझ रही है । अभी दस साल बाद उसकी शादी करनी है" । वह इन सब बातों का अर्थ समझने में असमर्थ थी । उसे तब इतना याद आता है कि स्कूल के दरवाजे उसके लिए बंद हो गये थे। घर के चौका बर्तन, झाड़ू पोछा, जानवरों के लिए चारा लाना, उन्हें खिलाना और सो जाना उसकी दिनचर्या थी। उसे लोग किसी नाम से पुकारते ही नहीं थे । अगर बहुत जरूरत हुई तो उसे फलाने की बेटी या फलाने की लड़की कहते थे । हाँ उसे याद आता है कि उसकी माँ बड़े प्यार से उसकी तरफ देखती थी ।

जब उसके खेलने की उम्र थी तब उसका विवाह कर दिया गया और वह भी एक अधेड़ के साथ । अब उसका नाम बदल गया । वह फलाने की बेटी के स्थान पर फलाने की बहू बन गई । एक गज का घूंघट हो गया । पहले उसकी निगाहें लोगों के भाव पढ़ने की कोशिश करती थी अब वह जमीन को घूरने लगी ।

थोड़ा आगे बढ़ने पर उसे याद आती है अपनी सास के वह ताने जिसमें वह कहती थी कि हमारे वंश का नाम कैसे चलेगा ? अभी तक यह एक बेटा जन नहीं पाई । उसकी समझ में कभी नहीं आया कि बेटा वंश का नाम कैसे बढ़ाता है और बेटी नहीं बढ़ा पाती । दो पीढ़ियों के बाद किसी को अपने परदादा का नाम याद नहीं रहता तब कैसे वंश का नाम बढ़ता है ।

उसे याद आता है कि जीवन के इस पड़ाव में उसने खुद को बहुत व्यस्त रखा । उसने अपनी बेटियों को बहुत पढ़ाया । उन्हें वह सब कुछ दिया जिसके लिए वह तरसती थी । उसने कड़ी मेहनत की । उसी के मेहनत की वजह से वह दोनों आज सुखी हैं लेकिन जीवन के इस द्वंद में, इस जद्दोजहद में उसे कभी भी अपने बारे में, अपने नाम के बारे में, अपने नाम को याद करने का समय ही नहीं मिला ।

आज सत्तर वर्ष बाद अपने नाम को याद करने का प्रयास करती है परन्तु वह विफल रहती है और वृद्धावस्था पेंशन बनाये बगैर वापस लौट आती है ।

अशोक कुमार
वरिष्ठ लेखाधिकारी
का0 रक्षा लेखा प्रधान नियंत्रक
(मध्य कमान) लखनऊ

ध्रुवतारे की तलाश

आज सुबह एक मासूम पर तीव्र आवाज के साथ मेरी नींद खुल गयी । अरे ये आवाज नींद खुलने की नहीं, वरन् नींद खुलने का कारण बनी थी । दुनिया की सारी मासूमियत सहेजे आधुनिक शिक्षा व्यवस्था पर एक मासूम का करारा व्यंग्य था ।

''मम्मा आज मुझे खेलना है'' । वो भी पार्क में खुले वृक्ष के नीचे और 'मम्मा' बेचारी मन में पिछले परीक्षा परिणाम का दर्द भूली भी नहीं थी कि कल पड़ोसन के मुँह से उसके बच्चे का अंक सुनकर ढेर सारी कुढ़न समेटे बैठी लंच बाक्स पैक कर रही थी। बच्चा जो शायद 8 या 9 साल का होगा अपने ही धुन में अपनी आवाज को गले की सारी नसों को जोर से दबाके निकाल रहा था ।

"मम्मा एक फुटबाल दिला दो न, मुझे खेलना है मम्मा" ।

पर 'मम्मा' शांत स्निग्ध भाव सा बनाए तन्मयता से अपने काम में लगी थी। एक स्वाभाविक मध्य वर्गीय (आधुनिक) गृह लक्ष्मियों वाली बड़बड़ाहट के साथ "लड़के का तो पढ़ाई में मन ही नहीं लगता। जब देखो तब खेल कूद धमा चौकड़ी, अरे ये कब समझेगा कि पढ़ेगा नहीं तो खायेगा क्या? अरे एक बार तो पड़ोसी के 'पप्पू' के बराबर अंक लाकर दिखा दे । देखो न वो डायन कैसे इतरा के कह रही थी कि पप्पू के अंक 95 प्रतिशत से ज्यादा ही हैं और यह है कि कसम खाये बैठा है 90 से ज्यादा जायेंगे ही नहीं । इसके चलते तो मैं पड़ोस में मैं मुँह दिखाने लायक ही नहीं रहूंगी" । सहसा उनकी आवाज तेज हुई और वो चीख सी पड़ी । "अरे अर्चित के पापा सुनते हैं ये आज स्कूल नहीं जायेगा" ।

तभी मेरी नींद खुल गयी और प्रारम्भ हुआ रोज रोज का महाभारत जिसका मैं क्या पूरा भारतीय समाज न सिर्फ अभ्यस्त बन गया है वरन इसे ही अपनी नियति मान इसमें शामिल होने की होड़ भी कर रहा है। प्रत्येक व्यक्ति की यह स्वाभाविक महत्वाकांक्षा है कि वह इस दौर में पीछे न रह पाये । इसी व्यवस्था के अधीन ये दम्पत्ति भी भारतवर्ष के भावी कल के निर्माण में लगे हुए थे । आगे का दृश्य मुझे पता था । एक आम भारतीय बाप का जो कभी बच्चों का सुपर हीरो हुआ करता था, आज बाल कल्पनाओं के लिए एक असिस्टेंट प्रोग्रामर से ज्यादा कुछ नहीं – शायद किसी फिल्म का खलनायक ही हो तो कोई आश्चर्य नहीं, धीरे–धीरे परिदृश्य पर आगमन था । "अर्चित !" और बस क्या ? अर्चित के होठ कुछ बिदकते हैं और अर्चित अपनी सारी खीज को दिल में दबाकर भारी मन से स्कूल यूनीफार्म को अपने बदन पर सजाने के उपक्रम में लग जाता है। परन्तु पता नहीं क्यों सब कुछ बदला बदला सा लग रहा था । सो मैं बदलाव के प्रतीक्षा में बैठ गया और नित्य कर्मों को थोड़ी देर के लिए आगे खिसका दिया ।

'पापा,आज नहीं होगा मुझसे । मैंने कल का होम वर्क नहीं किया है' ।

'अरे! करे कैसे , जब रात भर बैठ कर तारे निहार रहा था तो.....चलो बस्ता उठाओ स्कूल बस आती ही होगी' । और वो अनमने मन सा बस्ते की ओर बढ़ा । आहिस्ता से हाथ आगे बढ़ाया और रोज की भांति खुद में ही स्वजनों की अर्थी अपने कंधे पर सहेजने लगा । मेरे ऑखों की पुतलियाँ केंद्रित हो गयी थी। मस्तिष्क में विचारों का बहुत उथल पुथल चलने लगा था और वे लड़खड़ाते कदमों के साथ आगे बढ़ता जा रहा था, उस प्रयोगशाला की ओर जहां उसके मस्तिष्क के हार्ड डिस्क में कुछ निश्चित सूचनाओं को संरक्षित किया जाना था । उस प्रयोगशाला की ओर जहां उसके खुद के प्रश्नों को एक निश्चित दायरे में बांधा जाना था, जहां उसके असीमित उड़ान को कैद किया जाना था । मुझे विचारों के इस प्रवाह में ही वो दिन याद आ गया जब उसकी एक मासूम सवाल ने मुझे झकझोर कर रख दिया था ।

'अंकल एक बात बताइये'

'हाँ पूछों' , मैं कुछ थका थका सा उसकी बात को अनसुना सा करके बोला।

'जाने दीजिए आप शायद थक गये हों'। वह मेरे इस भाव को पढ़ने में कामयाब हो गया था । होता भी क्यों नहीं? अक्सर अपनी मम्मी पापा के चेहरे पर आने वाले इस तरह के उपेक्षात्मक भाव को पढ़कर तदनुसार आचरण करना सीख रहा था ।

'अरे , नहीं पूछो तो – मैं बताने की कोशिश करूंगा' । अपने चेहरे पर जबरन मुस्कान लपेटते हुए मैं बोला ।

'अंकल! एक कल का निर्माण कैसे होता है और हमारे स्कूल के प्रिंसिपल साहब ये कार्य कैसे करते हैं?'

बहुत मासूम सा प्रश्न था यह। और कोई असाधारण सा अर्थ भी नहीं दिख रहा था । पर मैं सोचने लगा और सोच में गहरा उतरता चला गया । आँखे बंद देखकर वो बच्चा धीरे से उठकर चला गया । हो सकता है उसे अपना होमवर्क याद आ गया होगा ।

बहुत देर तक मुझे यह नहीं सूझा कि प्रधानाध्यापक कल का निर्माण कैसे कर सकते हैं? हालांकि एक साधारण से जवाब दिया जा सकता है कि बच्चे कल हैं और बच्चों को शिक्षित कर कल का निर्माण कर रहे हैं । पर इस जवाब से मैं खुद ही संतुष्ट नहीं था । दुविधा यह थी कि आज का शिक्षण प्रशिक्षण कल का निर्माण है या कल के आधार का खाका । अगर निर्माण है तो अपरिवर्तनशील एवं सुनिश्चित कल के निर्माण में फलीभूत होगा । जहाँ तक मैं सोच सकता था, या बचपन से जो अब तक का अनुभव था मेरा, हमें केवल एक खाका प्रदान किया गया था । जो शिक्षण प्रशिक्षण हमें प्रदान किया गया था वो पुस्तकीय नहीं वरन् व्यवहारिक था। हम बचपन मे खुश रहते और स्वयं की गलतियों से सीखते। प्रकृति के खुले प्रांगण में अंतर्क्रिया के लिए हम स्वतंत्र थे। पर जो सीख हम अपनी गलतियों से लेते, वो भी आज के निर्माण में फलीभूत नहीं हुआ । वास्तव में आने वाले कल को भी हम वही क्रिया बार–बार कर रहे होंगे जो बचपन में किया करते थे । पर हमें जो प्रदान किया गया था , वह खुला असीमित आकाश था जहाँ हम निरंतर कल्पनाओं का महल बनाया करते। साथ ही कल दूसरे निर्माण की आजादी भी थी। पर प्रधानाध्यापक महोदय का यह वचन कि वो कल का निर्माण कर रहे हैं, मुझे तब तक तर्कसंगत नहीं लग रहा था। पर आज पता नहीं क्यों, उनका वचन सत्य लग रहा था। जहाँ एक सुनिश्चित पाठ्यक्रम के तहत निश्चित दायरे में बँधकर प्रकृति से दूर एक सुनिश्चित उद्देश्य के तहत प्रशिक्षित किया जा रहा है, वहाँ एक कल का निर्माण ही हो सकता है। उच्छृंखलता, प्रश्नों का, जीजिविषा का, बाल–सुलभ चंचलता का, वो विस्तृत फलक अब सीमित दायरों में कैद कर दिया गया था । एक स्वाभाविक मानसिक विकास की जगह एक प्रायोजित एवं सुनिश्चित सोपानिक क्रम ने ले लिया है। इस तरह अब बालमन को प्रोग्राम किया जा रहा है। ताकि आने वाले समय में वे संसाधन बन सकें। समाज में एक स्वतंत्र प्राकृतिक चिंतन की उपादेयता नहीं रहीं, अब शायद इसलिए अब मानव मष्तिष्क को एक प्राकृतिक संगणक बनाया जा रहा है जहाँ विशेष परिस्थितियों में विशेष प्रकार का निगमन प्राप्त होना था । मुझे संदेह है कि मानव मष्तिष्क इस निर्माण प्रक्रिया का एक कच्चा माल बन सकता है, परंतु इसमें कोई संदेह नहीं कि इस तरह से अगर हम कल के निर्माण की ओर अग्रसर हो रहे है तो वह परिपूर्ण नहीं परंतु एक त्रुटिपूर्ण निर्माण होगा। तभी मैं सामने की ओर देखा तो सूर्य देवता काफी ऊपर तक आ गये थे और घड़ी की सुईयां कार्यालय जाने का समय वाला कोण बनाने की तरफ अग्रसर हो रही थी । मुझे होश आया तो कहाँ भटक रहा था मैं। अरे, प्रधानाध्यापक महोदय ने तो एक जाना पहचाना वाक्य ही तो प्रयुक्त किया था। और समक्ष आया प्रश्न एक बाल सुलभ जिज्ञासा मात्र था। व्यवहारिकता को ध्यान में रखते हुए अपने जीविकोपार्जन को स्रोत की तरफ जाना ही अच्छा लगा ।

सायंकाल जब मैं वापस आया तो रात ढल चुकी थी. हालाँकि ग्रामीण परिवेश से होने के कारण मैं ऐसा कह रहा हूँ परंतु शहर के लिए यह शाम मात्र था । यही कोई आठ–नौ बज रहे थे । एक आम रूटीन वर्क के तहत मुहल्ले की बिजली गुल थी । सो मैं गँवई अँधेरे का लाभ लेने की इच्छा से शहर के काल कोठरी से बाहर ऊपर छत पर जाना ही मुनासिब समझा। बिजली गुल होने के कारण हमारे तरह के कई शहर–जीविता वाले लोग छत पर अपना स्थान पहले से ही ग्रहीत कर चुके थे । परंतु हमारी नजर कोने मे जाकर अकट गई जहाँ वह बालक ऊपर की तरफ टकटकी लगाए देख रहा था । मैंने सोचा, चलो इसी बहाने अपने बचपन को फिर से अपने अनुभव में लाऊंगा । सो मै उस बच्चे से अपनी बातें बाटनें आगे की

तरफ बढ़ गया। 'क्या देख रहे हो, अर्चित बेटा!'। एक बार तो उसने ध्यान नहीं दिया किंतु अगले ही पल मेरी तरफ देखा और पूछ बैठा कि 'ये तारे देख रहे हैं'। मैं उसकी तरफ देखने लगा । उसने कहा, 'इसमें ध्रुवतारे कहाँ है ?' मैं हालाँकि भूगोल का एक ठीक–ठाक विद्यार्थी रहा था, पर जवाब की जगह मुझे अपना बचपन याद आ गया । वो ध्रुवतारे की खोज में जुटा रहा, एक बार ऊपर देखा फिर मेरी तरफ और उँगली को उत्तर की तरफ आकाश में उठाकर बोला वो देखिए ध्रुवतारा। हमने पूछा 'कैसे पहचाना, बेटा?' वह सहसा रूआँसा हो गया और बोला 'कल सुबह आपके कमरे में एक किताब पढ़ रहा था। तारों भरा आकाश और उसमें बने चित्र के आधार पर पहचान लिया'। तभी मुझे याद आया कल की वह घटना जब उसको लंबी डाँट पड़ी थी। ''जब देखो तब इधर उधर घूमता रहता है, पढ़ना लिखना नौ बाइस''। तो क्या कल की पढ़ाई और आज का परिणाम उस परीक्षा परिणाम से कम था जो कागज के एक पन्ने पर अंकित होता है । मैंने उसे शाबासी दिया और बोला 'इतना सटीक पहचान एक बार में ही कैसे संभव है ?' उसके जबाव उतना ही सटीक था । ''हम सचित्र इस स्थान की तलाश कर रहे थे जहाँ ध्रुवतारा दिखाया गया था''। और सहसा उसने एक और प्रश्न दाग दिया– 'अंकल' ये ध्रुव कौन था?' मैंने पूछा, 'क्यो' ? 'वो उस किताब में कुछ लिखा हुआ था'। मुझे थोड़ी शरारत सूझी और एक मनोवैज्ञानिक तकनीक भी याद आयी । सो मैंने कहा बेटा पापा से पूछना वो बताएंगे । 'अरे नहीं वो डाँटेंगे' ।

'फिर मम्मा से' । 'नहीं वे तो खीझ जाती हैं' । 'चलो अपने क्लास टीचर से पूछ लेना' ।

'अरे वो, वो तो पहले ही होम वर्क माँगते है । आप ही बताइये न अंकल' ।

मैं ध्रुव का ध्रुवतारा बनने की कहानी सुनाने लगा जिसमें बहुत ही सरल भाषा में संकल्प स्वातंत्र्य तथा कर्म के द्वारा सफलता क्षितिज पाने का संदेश छिपा था । साथ ही यह भी याद कर रहा था कि कैसे बचपन में सारे प्राकृतिक तथ्यों को परंपरागत बाल–कहानियों के द्वारा महान संदेशों के साथ समझाया जाता था । हम बड़े ही सरलता के साथ कहानियों को हृदयंगम करते जाते । और आज के भूमंडलीकृत समाज में माता पिता के पास न तो इन कहानियों के लिए समय है न ही ये कल का निर्माण करने वाली है । गुरूजनों की बात ही क्या, वो तो एक लंबी फेहरिश्त चुने गए चुनिंदी पाठ्यक्रमों , जो कल को प्रक्षेपित करने की क्षमता से युक्त हैं, को सँभालनें में ही बेजार है और ये मासूम प्रश्न भारी बस्ते के नीचे दबे जा रहे है । विस्तृत आकाश कंक्रीट के दीवालों से आबद्ध है । हम इन प्रश्नों के सागर में उतर रहे थे और वो नन्हा गैलीलियो दूर तारों की दुनियां में खोया अपना कल तलाश रहा था । हो सकता है उसने अपना कल अभिकल्पित कर लिया हो जो हमारे प्रक्षेपणों से इतर कुछ अलग अस्तित्व रखता हो ।

आशुतोष कुमार तिवारी
अनुभाग अधिकारी
वेतन लेखा कार्या.(अ.श्रे.)
सैन्य चिकित्सा दल , लखनऊ

''एक अच्छी पुस्तक हजार दोस्तों के बराबर होती है जबकि एक अच्छा दोस्त एक लाइब्रेरी (पुस्तकालय) के बराबर होता है'' – डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम

उसका पसीना मेरा पसीना

न जाने किस घड़ी में यह ब्रह्मवाक्य सुना था कि खून–पसीने की कमाई खाने वाले ही स्वर्ग के अधिकारी होते हैं । अब जब भी ग्रास मुँह की तरफ करता हूँ निगाह एकदम शरीर पर जाती है.....पसीना आया या नहीं ? पिता जी और उनके समकक्ष दूसरे आदमी यह सीख देते बूढ़े हो गये कि बेटा ,सदा पसीने की कमाई खाना । मैंने गाँठ बांध ली–बिना पसीने का दाना हराम ।

परावलम्बी बचपन में तो सेती का चंदन, घिस मेरे ललवा ! हमने खूब मन लगाकर खाया । क्योंकि पता था कि पिताजी की कमाई है सो उन्होंने खून–पसीने से ही जोड़ी होगी ।

घर के सामने दूबे जी ने अपने लॉन में कई फलदार पौधे लगाए थे । मैंने अपनी ऑखों से देखा जब सुबह सवेरे फावड़ा लेकर वे जमीन खोदते, पानी देते या खाद डालते तो उनके शरीर से पसीना निकलने लगता । मैंने दूबे को कभी दूसरा नहीं समझा । पसीना उनके शरीर से निकला या मेरे से, बात तो एक ही है । आखिर मित्रता और किस काम आएगी ?

अब मौका लगते ही उनके पेड़ों से फल तोड़कर खाने में मुझे जरा भी संकोच नहीं होता । मित्र ने पसीना बहाकर ही तो पेड़ तैयार किए हैं ।

ऐसे ही गर्मियों में मिठाई खाने का शौक ज्यादा सिर चढ़ जाता है । क्योंकि बर्फी बनाते समय भट्ठी के पास बैठे हलवाई के शरीर पर पसीना आ जाए तो हमें बर्फी को मेहनत की बर्फी कहने से नहीं हिचकिचाना चाहिए । भला ऐसी मिठाई को खाने में क्या हर्ज ?

लाला फकीर चंद को अपनी विशाल तोंद पर गर्व है । उन्होंने इसे बड़े नाजों से पाला है । लोग कहते थे ये साहूकार निठल्ले खाते रहते हैं । परंतु रोटी खाते समय यदि वे लोग उनके चेहने को देख लें तो स्वयं शर्मिंदगी अनुभव करेंगे । भारी–भरकम शरीर को खिलाने के लिए बराबर मुँह चलाते समय लाला जी के शरीर से पसीने की धाराएं फूट पड़ती हैं। ऐसे में कैसे कह दें कि ये पसीने की रोटी नहीं खाते ?

जीवन के मझधार में आकर अब मुझे भी लगने लगा कि इस मजे का बखान वही कर सकते हैं जो इसके आदी रहे हों । जिस मकान में मैं रहता हूँ उसमें सभी सुविधाएं प्रकृति–प्रदत्त हैं । दरवाजे टूटे होने से गर्मियों में धूप, वर्षा ऋतु में छत से टपकता पानी या सर्दियों में ठंडी हवा की सिरहन स्वतः पसीना ला देती है । रही– सही कसर मकान मालिक के कटु व्यहवार से पूरी हो जाती है । कई सालों से जिसे किराया न मिला हो, ऐसे फुंकारते गृह स्वामी को देखकर किसका पसीना न छूटेगा । उसकी जली–कटी सुनने के बाद मैं बड़ी खुशी से किराए हेतु रखे धन को इस्तेमाल कर लेता हूँ । आखिर इसके लिए हमने पसीना बहाया है ।

एक बार जब पत्नी के हाथों और चेहरे पर पसीना अधिक आने लगा तो मैंने डॉक्टर को दिखाया । पत्नी की बीमारी और डॉक्टर की फीस सुनते ही मैं तो तर–बतर हो गया । बड़ी मुश्किल से पत्नी को समझाया 'भाग्यवान' ! पिताजी ने कहा है, पसीना शुभ होता है । घंटे भर भाषण सुनने के बाद उसने रसोई में घुसना स्वीकार किया ।

मेरे लेखन को पत्नी से कभी मान्यता नहीं मिली । वह कहती है– ऐसी कविता का क्या लाभ जिसे लिखने में तुम्हें या सुनने में श्रोता को पसीना न आए? भूले–भटके कभी किसी पत्रिका से पारिश्रमिक पहुँच भी गया तो बह इसे किसी भिखारी या साधु सन्यासी को दान दे देती है । उसके अनुसार यह बिना पसीने की कमाई होने के कारण अशुभ है ।

हमारे दफ्तर में बड़े साहिब इस सिद्धांत के अनुयायी हैं कि पसीना सूखने से पहले कर्मचारियों को वेतन मिल जाना चाहिए । वे महीने के आखिरी दिनों में पंखे, कूलर तथा खिड़कियॉ बंद करवा देते हैं ताकि कर्मचारियों को पसीना आ जाए । वैसे तो काम न करने से पसीने का मतलब ही नहीं । ऐसे ही शरीर पर पसीना लाया जाता है । तब साहिब वेतन देते समय स्वयं देखते हैं कि कहीं तनख्वाह लेते समय कर्मचारी का पसीना सूख तो नहीं गया ? और यदि दैवयोग से किसी का बनियान पसीने से लथपथ न मिला तो उसे यह कहकर वेतन नहीं दिया जाता कि आज तुम्हारे शरीर पर पसीना नहीं आया । जब पसीना आयेगा तो उसके सूखने से पहले पैसे ले जाना ।

अब तो शरीर पसीने का आदी हो गया है । चोर अथवा सिपाही को देखकर, बाजार में चीजों के भाव सुनकर या पत्र–पत्रिकाओं में खूनी समाचार पढ़कर पसीना स्वयं छूटने लगता है ।

आज्ञाकारी पुत्र की भॉति पिताजी की उक्ति रोज मस्तिष्क में दोहरा लेता हूँ और परब्रह्म से प्रार्थना करता हूँ कि मेरी मृत्यु ज्वर या ऐसी ही किसी बीमारी से हो जिससे पसीना आये, ताकि यमराज के दरबार में दावा कर सके कि पसीने की मौत मरकर आये हैं ।

श्री श्रीनिवास वत्स
सहायक निदेशक(राजभाषा)
कार्यालय रक्षा लेखा नियंत्रक (वायु सेना)
नई दिल्ली

''हिंदी ही उत्तर और दक्षिण को जोड़ने वाली समर्थ भाषा है''। – अनन्त शयनम अयंगर

हिंदी का प्रयोग– समस्याएं एवं समाधान

भारत एक धर्म–निरपेक्ष एवं कृषि प्रधान देश है । इसमें लगभग 1652 बोलियॉ बोली जाती हैं जिसमें मातृभाषाओं की संख्या 33 है । इनमें 18 भाषाओं को संविधान की 8वीं सूची में रख गया है । यह सभी राष्ट्रभाषाएं हैं । आजादी के बाद भारतीय संविधान सभा के सम्मुख महत्वपूर्ण समस्याओं में भाषा की समस्या सर्वाधिक गंभीर थी । भारतीय संविधान सभा में हिंदी को सरकारी भाषा बनाने के पक्ष और विपक्ष में गंभीर संवाद हुआ । 78 मत पक्ष में तथा 77 विपक्ष में पड़े । डॉ. भीमराव अंबेडकर के अनुसार मात्र एक मत से हिंदी को राजभाषा का दर्जा प्राप्त हुआ ।

भारत का संभ्रांत वर्ग, उच्चस्तरीय मध्य वर्ग, नौकरशाह, वैज्ञानिक, बुद्धिजीवी, न्यायाधीश, वकील एवं उच्चस्तरीय राजनेता आदि भारतीय भाषाओं की अपेक्षा अंग्रेजी को अधिक महत्व देते हैं । धनी वर्ग के लोग अपने बच्चों को शिक्षा हेतु उच्चस्तरीय उन निजी विद्यालयों में भेजना पसंद करते हैं जहॉ प्रथम कक्षा से ही अंग्रेजी माध्यम की सुविधा हो । यह संभ्रांत वर्ग, प्रशासन, न्यायपालिका, आयुर्विज्ञान अनुसंधान,अभियांत्रिकी एवं उच्चस्तरीय तकनीकि संस्थानों इत्यादि पर अपना वर्चस्व एवं आधिपत्य बनाए रखना चाहता है। यही वर्ग अंग्रेजी को अधिक विकसित मानता है, अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर इसे संपर्क भाषा मानता है और हिंदी तथा क्षेत्रीय भाषाओं की अपेक्षा अंग्रेजी भाषा को जारी रखने की वकालत करता हे । साथ ही इस बात की दुहाई देता है कि सभी वैज्ञानिक अनुसंधान, कम्प्यूटर की भाषा,तकनीकि विकास आदि का साहित्य एवं पुस्तकें अंग्रेजी में उपलब्ध हैं । इसलिए भारत की वैज्ञानिक उन्नति के लिए अंग्रेजी अपरिहार्य है । यह वर्ग आम जनता को प्रशासनिक तथा राजनैतिक पदों से वंचित रखने के लिए अंग्रेजी का साम्राज्य बनाए रखना चाहता है । अंग्रेजी भाषा के समर्थकों ने 1991के बाद यह तर्क देते हुए कि इसके बिना काम नहीं चलेगा, अंग्रेजी को वैश्वीकरण और भूमंडलीकरण की भाषा माना है ।

महात्मा गॉधी के अनुसार अंग्रेजी भाषा के माध्यम से स्नातक स्तर की शिक्षा में कम से कम सोलह वर्ष लगते हैं । यदि इन्हीं विषयों की शिक्षा मातृभाषा में दी जाए तो ज्यादा से ज्यादा 10 वर्ष लगेंगे । हजारों विद्यार्थियों के 6 वर्ष बचने का अर्थ, कई वर्ष जनता की सेवा के लिए मिल जाना होता है । विदेशी भाषा द्वारा शिक्षा पर जो बोझ हमारे बच्चों पर पड़ता है ,वह असह्य है।

अंग्रेजी माध्यम से शिक्षा प्राप्त व्यक्ति चाहे कितना भी संवेदनशील क्यों न हो उसे जन–साधारण की भावनाओं, आकांक्षाओं ,मूल्यों , रुचियों व समस्याओं का ज्ञान नहीं हो पाता है । विदेशी भाषा में शिक्षित वर्ग, समाज से कटा हुआ व अलग–थलग सा रहता है । ऐसी स्थिति में समाज के साधारण लोगों तथा अंग्रेजी माध्यम से शिक्षित लोगों के मध्य एक खाई सी उत्पन्न हो जाती है और जनसाधारण ऐसे वर्ग को उच्च मानकर, अपने को अधीनस्थ स्थिति में समझने लगता है । फलस्वरूप उनके बीच स्वामी एवं दास जैसे संबंधों की गंध आने लगती है । ऐसा संबंध समानता एवं स्वतन्त्रता के सिद्धांतों के विपरीत है तथा समाज, राष्ट्र एवं जनतंत्र के लिए घातक होता है ।

समस्याएँ –

- हीन–भावना का उत्पन्न होना ।
- प्रारंभिक शिक्षा का माध्यम अंग्रेजी होने के कारण अंग्रेजी से प्रेम तथा हिंदी से घृणा ।
- सरकार का अपने ही आदेशों पर ठोस कार्रवाई न करना ।
- योजनाओं का अभाव (हिंदी माध्यम से इंजीनियरिंग, कृषि, आयुर्विज्ञान इत्यादि विषयों में शिक्षा का अभाव)
- वर्चस्व टूटने के भय से, सुविधाभोगी वर्ग द्वारा हिंदी का विरोध किया जाना ।

समाधान–

- हीनभावना निकालने हेतु रूस, चीन, जापान आदि देशों के उदाहरण प्रस्तुत करना होगा ।
- प्रतिष्ठा बढ़ेगी इसका विश्वास दिलाना होगा ।
- मानसिकता को पूरी तरह से बदलना होगा ।
- प्रधानमंत्री संयुक्त राष्ट्र महासभा एवं अन्य देशों के भ्रमण के दौरान हिंदी में भाषण देकर गौरान्वित होते हैं, (उदाहरणार्थ श्री अटल बिहारी बाजपेयी एवं श्री नरेंद्र मोदी (27.09.2014) ।
- मानसिकता में बदलाव।
- राजभाषा संबंधी नियमों, निर्देशों, अधिनियमों का सख्ती से अनुपालन किया जाए तथा उल्लंघन करने वालों के विरुद्ध सख्त कार्रवाई तथा दंड का प्रावधान किया जाना चाहिए ।
- प्रत्येक सरकारी नौकरी के लिए हिंदी की अनिवार्यता पर बल दिया जाए ।
- हिंदी को बलपूर्वक न थोपा जाए बल्कि स्वेच्छा से ग्रहण किया जाए ।
- जनता को लामबद्ध किया जाए ।
- आमतौर पर हिंदी के प्रचलित शब्दों का प्रयोग किया जाए ।
- हिंदी में शोध कार्य के लिए पर्याप्त छात्रवृत्ति होनी चाहिए ।
- हिंदी में उच्च स्तरीय अनुसंधान पत्रिका निकालनी चाहिए जिसे नासा से अनुमोदन प्राप्त हो ।
- प्रत्येक संस्थानों, बैंको, न्यायालयों व सरकारी कार्यालयों में हिंदी अनुभागों को सशक्त एवं प्रभावी बनाना होगा ।
- जनता को यह समझाया जाए कि सत्ताधारी वर्ग, प्रशासनिक भ्रष्टाचार एवं हेरा–फेरी के लिए अंग्रेजी के प्रयोग पर बल देता है ताकि व्यवस्था आम जनता की समझ से बाहर रहे ।
- दोहरी स्कूली व्यवस्था को समाप्त किया जाए अर्थात समान शिक्षा–स्तर पर बल दिया जाए ।
- सभी विषयों में शोध का माध्यम हिंदी होना चाहिए ।
- साक्षात्कार का माध्यम भी हिंदी होना चाहिए ।

यदि हिंदी के प्रयोग में आने वाली समस्याओं एवं उनके समाधान हेतु ऊपर सुझाए गए विभिन्न उपायों पर गंभीरता एवं ईमानदारी से अमल किया जाए तो देश में प्रत्येक संस्थानों, बैंकों एवं सरकारी कार्यालयों में हिंदी के प्रयोग की स्थिति बेहतर होगी । फलस्वरूप हिंदी का विकास होगा और भारत एक सुदृढ़ एवं शक्तिशाली राष्ट्र होगा ।

दिनेश कुमार खरे
लेखा परीक्षक
का. स्था .ले.प.अ.(भं)
आ.भं., किला, इलाहाबाद

''जनता की बात जनता की भाषा में होनी चाहिए''। – महात्मा गाँधी

परिवर्तन प्रकृति का एक शाश्वत नियम

परिवर्तन प्रकृति का शाश्वत नियम है । कोई भी इससे अछूता नहीं है। सृष्टि के द्वारा निर्मित समस्त चीजों पर परिवर्तन का प्रभाव पड़ना अवश्यंभावी है। प्रकृति को ईश्वर ने कुछ इस तरह से संवारा और सजाया है कि वर्ष के 12 महीनों में न तो एक जैसी ऋतुएं होती हैं और न ही उनका एक जैसा प्रभाव । जैसे जैसे समय बीतता है ऋतुएं परिवर्तित होती हैं और प्रकृति कभी सर्दी, कभी गर्मी, कभी बसंत, कभी बरसात जैसे अनेक अनुभवों से हमें परिचित करवाकर जीवन के अनेक खट्टे–मीठे अनुभवों से रूबरू करवाती है । यदि जीवन में एकरसता आ जाए तो मनुष्य ऊबने सा लगता है। जीवन में कुछ खालीपन एवं निराशा का सा अनुभव होने लगता है । इसलिए मनुष्य के जीवन में सुख–दुख, राग–अनुराग , उन्नति–अवनति जैसे विभिन्न रंगो का समावेश अत्यावश्यक है । इसलिए जीवन पथ पर अग्रसर रहते हुए हमें प्रकृति के नियमों का अनुपालन करते हुए परितर्वन की प्रक्रिया को आत्मसात करने हेतु सदैव तत्पर रहना चाहिए ।

ईश्वर की सबसे श्रेष्ठ एवं अलौकिक कृति मनुष्य है, ईश्वर जब मनुष्य को धरती पर उतारता है तो वह एक छोटे से शिशु के रूप में इस धरती पर जन्म लेता है । शनैः–शनैः वह बाल्यावस्था से किशोरावस्था, युवावस्था तत्पश्चात प्रौढ़ावस्था से होते हुए वृद्धावस्था को प्राप्त करता है। यह प्रकृति परिवर्तन का उदाहरण है । प्रकृति प्रदत्त परिवर्तन का नियम शाश्वत है और इसका सामना सभी को करना ही पड़ता है । इसलिए मनुष्य को जीवन पथ पर परिवर्तन को आत्मसात करते हुए बढ़ते रहना चाहिए । इस संदर्भ में एक गीत की पंक्तियॉ कुछ इस तरह हैं

रुक जाना नहीं, तू कहीं हार के,

काँटों पे चलके मिलेंगे साए बहार के ।

परिवर्तन चाहे मनुष्य के जीवन में हो, स्थान में हो या जीवन स्तर में, परिवर्तन तो निःसंदेह अत्यावश्यक है क्योंकि यदि किसी भी व्यक्ति को एक ही वातावरण में रहने के लिए बाध्य किया जाए तो अंततोगत्वा एक सी परिस्थितियाँ, एक सा वातावरण और एक सी जीवनशैली उसे जीवन से निराश कर देंगी । इसके विपरीत यदि मनुष्य को परिवर्तित परिस्थितियां, वातावरण एवं जीवनशैली को ग्रहण करने का अवसर प्राप्त हो, तो यह परिवर्तन सुखद, आनंददायक एवं उन्नतिकारक साबित होगा ।

कोई कलाकार जो अपनी कृति बनाता है वह उस कृति को सांचे में ढालकर अनेक तरह से काट–छाँट कर, उसमें सपनों एवं कल्पना के रंगों को भरकर आकर्षक रूप प्रदान करता है । इस प्रक्रिया में वह कृति अनेक परिवर्तनों से गुजरते हुए एक सुंदर,आकर्षक एवं मनोहारी रूप ग्रहण कर लोगों का ध्यान अपनी ओर आकृष्ट करने में सक्षम बनती है ।

पृथ्वी पर जब मानव जीवन का आरंभ हुआ तो प्रारम्भ में मानव,पशुओं के समान जीवन जीता था, नग्न अवस्था में रहता था, पशुओं का शिकार कर अपना पेट भरता था । धीरे–धीरे परिवर्तन की प्रक्रिया ने मानव जीवन को परिवर्तित किया । मनुष्य ने अपना तन ढकने के लिए कपड़े पहनना और पेट भरने के लिए अनाज एवं सब्जियों को उगाना एवं खाना प्रारम्भ किया और तो और विज्ञान एवं सूचना प्रौद्योगिकी (आई टी) के माध्यम से क्रान्ति का बिगुल फूंकते हुए ऐसे ऐसे कार्य कर दिखाए जो पहले केवल मनुष्य की कल्पना मात्र में हुआ करते थे ।

जीवन में कुछ नया या अद्भुत करने की प्रक्रिया ही परिवर्तन है । इस संसार में जितने भी श्रेष्ठ या महत्वपूर्ण व्यक्ति हैं या हुए हैं उन्होने जीवन की बँधी– बँधाई लीक से हटकर परिवर्तन की राह पकड़ी और कुछ अलग हट कर करने

का प्रयास किया और निरंतर उस राह पर बढ़ते रहे, बिना विचलित हुए अपने लक्ष्य को ध्यान में रखते हुए, अनेक बाधाओं को पार किया तब जाकर वे श्रेष्ठ बने । चाहे वह धीरूभाई अंबानी हों, बिल गेट्स हों, इंदिरा गॉधी या अन्य श्रेष्ठ विभूतियां । किसी ने सच ही कहा है

सपने उनके होते हैं पूरे जिनके सपनों में जान होती है ।

पंखों से कुछ नहीं होता , हौंसलों से उड़ान होती है ।।

परिवर्तन कभी–2 दुखद भी हो सकता है क्योंकि सदैव सबके लिए समान परिस्थितियां लाभप्रद या प्रगतिकारक नहीं हो सकतीं, फिर भी मनुष्य को अपनी निष्ठा, लगन एवं सार्थक प्रयासों से सही रास्ते पर चलकर आगे बढ़ने हेतु अपनी समस्त उर्जा लगा देनी चाहिए । अंततः उसे सफलता अवश्य प्राप्त होगी ।

कौन कहता है कि आसमां में छेद नहीं हो सकता ।

एक पत्थर तो जरा, तबीयत से उछालो यारों ।।

संकल्प खरे

पुत्र श्री दिनेश कुमार खरे

लेखा परीक्षक

का. स्था.ले.प.अ. (भं)

आ.भं., किला, इलाहाबाद

पुरस्कार का महत्व

- पुरस्कारों का मानव के जीवन में बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान होता है । इसमें जहां व्यक्ति को सतत् और सघन कार्य करने की अनुपम प्रेरणा मिलती है ,वहीं यह उनके लिए अखंड उत्साह का अक्षय स्रोत भी सिद्ध होते हैं ।
- पुरस्कार मानव को कर्मनिष्ठ , कर्तव्यनिष्ठ और ध्येयनिष्ठ बनाने के लिए अत्यंत प्रेरक शक्ति होते हैं ।
- पुरस्कार शब्द में एक ऐसा अद्‌भुत , अभूतपूर्व और अकल्पनीय आकर्षण होता है कि इसका ध्यान आते ही प्राप्तकर्ता चाहे वह व्यक्ति हो, या जाति, समाज अथवा राष्ट्र हो अपनी उत्सुकता और प्रफुल्लता को छिपाना चाहते हुए भी छिपा नहीं पाता ।
- पुरस्कार व्यक्तिगत हो या समष्टिगत, संबंधित के मन, मस्तिष्क और हृदय की तंत्रियों को अंतरतम तक झंकृत कर देता है और इसमें उसे एक ऐसे दिव्य आनंद की अनुभूति होती है जिसे न तो शब्दों में बोलकर न ही भाषा में लिखकर और न ही शारीरिक चेष्टाओं से, सही रूप में, अभिव्यक्त किया जा सकता है । वह तो वर्णनातीत होता है ।
- पुरस्कार प्राप्तकर्ता एक ओर जहां स्वयं तो अपने को गर्वित और आत्मविश्वासी महसूस करता ही है, अन्य तमाम व्यक्तियों को प्रतिस्पर्धा हेतु प्रोत्साहन एवं प्रेरणा प्रदान करने का सशक्त एवं निःशुल्क माध्यम भी बनता है ।
- पुरस्कार, प्राप्तकर्ता और प्रदत्ता दोनों के लिए अतुलनीय रूप में आनंददायी तो होती ही है, पुरस्कार वितरण का अवसर भी कभी–कभी काई ऐसी घटना छोड़ जाता है जो प्राप्तकर्ता और प्रदत्ता के लिए चिरस्मरणीय बन जाता है ।
- पुरस्कार, पुरस्कार ही होता है । इसमें बड़ा या छोटा होने, अधिक या कम राशि का होने, स्थानीय या अखिल भारतीय स्तर का होने से कोई अंतर नहीं पड़ता । यह छोटे या बड़े सभी अवसर पर व्यक्ति को सम्मानित एवं गौरवान्वित ही करता है ।

कुमारी शिवांगी खरे
पुत्री श्री दिनेश कुमार खरे
लेखा परीक्षक
का. स्था.ले.प.अ. (भं)
आ.भं., किला, इलाहाबाद

"निष्ठुर आलोचना और स्वतंत्र विचार ये क्रांतिकारी सोच के दो अहम लक्षण हैं"–भगत सिंह

एक दिन और

एक और दिन आ गया
और शुरू हो गयी
वही जद्दो–जहद

भागना गाड़ियों के पीछे
तो कभी गाड़ियों के साथ
और भागते रहते हैं
समय के साथ
लेकिन होती हैं साथ हमारे
वही बेचैनी, वही तनाव

वजूद खोकर रह गया
जिंदगी फाइलों मे
दब कर रह गयी
एक से निकलते हैं
तो दूसरी दबोच लेती है
मिलते हैं लोग
अजनबी की तरह
ढूंढता है मन कोई
हो अपनो की तरह

ये जिंदगी है भटकती
कभी चलती कभी अटकती
जाती शाम एक आस दे जाती है
आती सुबह उसे भगा ले जाती है

लो एक दिन और आ गया
और एक आस दिला गयी
झूठी ही सही
और गुजरती है जिंदगी यूं ही सही ।

विजय कुमार, भा.र.ले.से.
एकीकृत वित्तीय सलाहकार
मध्य कमान , लखनऊ

"मैं ऐसे धर्म को मानता हूँ जो स्वतंत्रता , समानता , और भाई -चारा सीखाये"- डा. बी. आर. अम्बेडकर

यही तो है मुश्किल

हम तुम मिले
फिर साथ चले
चलते गए, चलते गए,
लगा
जिंदगी के हर मोड पर
होंगे
तुम साथ हमारे
फिर
एक ऐसा मोड़ आया
तुम निकल गए
आगे हमारे ।

छोड़ गए हमें
किस्मत के सहारे
और
रह गया भटक के मैं,
और
देखता रह गया
उस राह को
जिस पे चल के तुम
दूर होते चले गए

अब भीड़ मे खो कर
रह गया हूँ।
ढूँढ़ता है दिल तुम्हें
इस अजनबी डगर पर
तकती आँखें
पथरा के है रह गयीं
तुम्हारे इंतज़ार में

तुम कभी न
वापस आओगे
और
हम कभी न फिर मिल पाएंगे

यह जानता है दिल
पर नहीं मानता है दिल
कैसी है ये चाह, कैसा है ये दिल
यही तो है उलझन ,
यही तो है मुश्किल।

विजय कुमार, भा.र.ले.से.
एकीकृत वित्तीय सलाहकार
मध्य कमान , लखनऊ

"नई चीज सीखने कि जिसने आशा छोड़ दी, वह बूढ़ा है" – विनोबा भावे

भारत

जन्म तुम्हारा भारत में और मरण तुम्हारा भारत में।
भारत ने पाला तुमको, लाज सँवारा भारत ने ।।
भारत देश है वीरों का, मत बन कायर तू भारत में ।
भ्रष्टाचार और बेईमानी, नहीं सहेंगे भारत में ।।
एक बार पूरी ताकत से बाजू फड़के जो भारत में ।
दुनिया वाले भी तो देखें, कितना दम है भारत में ।।
चलो आज संकल्प ले, गांधी जी के भारत में ।
सत्य अहिंसा की पौ बारह, हो कर रहेगी भारत में ।।
कहने का तात्पर्य, नहीं हम भूल रहे कुछ भारत में ।
वीर शिवाजी और भगत सिंह भी पैदा होते भारत में ।।
दीप दीवाली और दशहरा खूब मनाई भारत में ।
पड़ी जरूरत हमने खेली खून की होली भारत में ।।
महावीर और बुद्ध से सीखा प्यार अहिंसा भारत में ।
राणा के कौशल से सीखा स्वाभिमान इस भारत में ।।

अनिल कुमार गुप्त
व.ले.अधिकारी
वेतन लेखा कार्यालय (अ.श्रे.)
सैन्य चिकित्सा दल, लखनऊ

''ज्ञान स्वयमेव वर्तमान है, मनुष्य केवल उसका आविष्कार करता है''। स्वामी विवेकानन्द

मन–उदगार

जाने क्यूँ एक अथाह शून्य है मेरा मन
ना किसी हर्ष का अनुभव
ना किसी शोक का भाव।

जाने कहाँ भटका फिरता है
क्या कोई खोज बाकी है
या मृत हो चुकी है सभी अभिलाषाएं

बहुत खोजा पर कुछ हाथ न लगा
निःशब्द मौन अग्र पथ पर बढ़ता गया जीवन
कुछ अकथ, कुछ अनकहे अध्याय पढ़ता गया जीवन ।

न परिदृश्य बदला हैं ना लक्ष्य डिगा है
लड़खड़ाते ही सही पर हर पग आगे बढ़ा है ।

पर अभी उस भावना शून्य मन के
सागर में एक शहद सी बूंद मिली
एक पुनर्जागरण का बिगुल–सा सुनाई दिया ।

बस एक क्षण के लिए
कोई भावना छू गयी मेरे अंतर्मन को ।

पर वो एक क्षण ही यथेष्ट था
मुझे जगाने के लिए ।

उस एक पल ने ही झनका दिए थे मेरे
हृदय के सहस्रों तारें
कोई सुर बनाने के लिए ।

पता नहीं वो क्या था
मन की एक नई आवाज
या एक प्रयत्न है– अंधकार
में एक नई रोशनी की खोज ।

रमेश सिंह
कनिष्ठ अनुवादक
का. क्षे.प्र.के. लखनऊ

पागल कवि

धर्म के नाम पर
एक दूसरे का
वहशियों की तरह
गला काट रहे ये लोग
और पागल मैं हूँ ।

ईमानदारी का ढोंग कर
बेईमानी पर शोर करने वाले
रिश्वत पर रिश्वत
लिए जा रहे ये लोग
और पागल मैं हूँ ।

शहर सुंदर करने को
सड़क चौड़ी करने को
देश की तरक्की के नाम पर
गरीबों के सपने ढाह रहे यो लोग
और पागल मैं हूँ ।

फर्जी मुठभेड़ों में
आतंकवादी–नक्सली कह
मासूम नौजवानों को
सरे आम गोली मार रहे ये लोग
और पागल मैं हूँ ।

धर्म की दुहाई दे
समाज संस्कृति की आड़ में
लड़कियों को जानवरों की तरह
बेच –काट रहे ये लोग
और पागल मैं हूँ ।

अगर ऐसे ही
सभ्य होना है
तो मैं पागल ही बेहतर हूँ ।

मोहम्मद अशरफ
कनिष्ठ अनुवादक
का. रक्षा लेखा प्रधान नियंत्रक
नई दिल्ली –110011

दफ्तरी

माँ थोड़ी सी रिश्वत दे दे मैं बाबू बन जाऊँ ।

गड़बड़ और घोटाले करके ऊंचा महल बनाऊँ,
टीवी, फ्रिज और वाशिंग मशीन ए सी भी लगवाऊँ,
सारे सुख चैन खरीदकर सच्चा लाल कहाऊँ ।

माँ थोड़ी सी रिश्वत दे दे मैं बाबू बन जाऊँ ।

मिल जाए थोड़ा जो मौका फिर नेता बन जाऊँ,
जाति धर्म की फसल सींचकर अपनी कुर्सी चमकाऊँ,
मंत्री और मिनिस्टर बनके खूब दलाली खाऊँ ।

माँ थोड़ी सी रिश्वत दे दे मैं बाबू बन जाऊँ ।

मोहम्मद अशरफ
कनिष्ठ अनुवादक
का. रक्षा लेखा प्रधान नियंत्रक
नई दिल्ली –110011

"हिन्दी एक जानदार भाषा है। वह जितनी बढ़ेगी, देश का उतना ही नाम होगा।"– जवाहर लाल नेहरू

मेरे पड़ोस में

अल्लाह की मर्जी या दिमागों का खलल है
क्या माजरा असल है मेरे पड़ोस में ।
ये कौन सी मिट्टी है और कौन सा पानी है
ये कौन से मजहब पे मिटने को जवानी है
ये कौन सी नसल है मेरे पड़ोस में ।
इंसानियत का जज्बा दिखता नहीं है कोई
हैवानियत से इनके बचता नहीं है कोई
इंसाफ का कतल है मेरे पड़ोस में ।
खिलते को मसल देना, हँसते को रुला देना
चिरागों को बुझा देना, अँधेरे को बढ़ा देना
दिन रात का शगल है मेरे पड़ोस में ।
नफरत भरे जो दिल में, ऑखों में खून लाये
कर दे जिगर को छलनी, अपने लगे पराये
ये कौन सी गजल है मेरे पड़ोस में ।

विकास कुमार वर्मा
सहा. ए. वि. स.
मध्य कमान, लखनऊ

"आजादी की रक्षा केवल सैनिकों का काम नही है . पूरे देश को मजबूत होना होगा"– लाल बहादुर शास्त्री

आओ अच्छे काम करें

आओ अच्छे काम करें, जीवन में हम नाम करें
जन्म लिया है मानव का, मानव हित की बात करें ।
बहुत हो चुकी टांग खिंचाई, आपस में बैर बुराई ,
आओ आगे बढ़कर सोचें , देश हित की बात करें ।।
आओ अपने तेवर बदले , जीवन में संगीत भरें
नयी भोर की किरणों से , अंधकार को दूर करें ।
ऐसी बात नहीं कि, काम न अच्छा कर पाएं
आओ निज स्वार्थ छोड़े, जन हित की बात करें ।।
है जरूरत कम की, क्यों इकट्ठा अर्थ करें ,
जीवन के संग्राम में, अपने हित का त्याग करें।
दिया विधाता ने है, सारा धरती के आंगन में ,
आंगन की फुलवारी को, अपना हम सहयोग करें ।।
नहीं चाहिए मन को सब, संतोष भाव ही रहता है ,
भौतिक सुख सुविधा पाकर भी, खाली दिल ही रहता है,
आओ विजय हार के प्रहसन में,मन विजय स्वीकार करें ।
कल कल बहते झरने हैं, टिम–2 करते तारे हैं ,
जीवन में बहुत सितारे हैं, लाखों लोग हमारे हैं,
लाखों लोग यहाँ, बिन छत के रात गुजारे हैं ।
आओ आने वाले कल के सपने हम साकार करें ।
मानव का जीवन पाकर भी , काम दानवों का करते हम,
नापाक इरादों से क्यों , आपस में लड़ते हम,
ऊपर बैठा भगवान हमें, देख रहा है हर क्षण ,
बाट जोटता है तुमसे, धरती का हर कृष्ण ,
आओ हम संकल्प करें, मानवता का कल्याण करें ,
जाना तो एक ध्रुव सत्य है, सबको एक–एक करके,
जाने से पहले हम, संसार रोशनी से भर जायें,
आओ अच्छे काम करें, जीवन में अब नाम करें ।

राघवेंद्र दीक्षित
स.ले.अ.
का. रक्षा लेखा प्रधान नियंत्रक
(म.क.)लखनऊ

" लोगों को सच्चा लोकतंत्र या स्वराज कभी भी असत्य और हिंसा से प्राप्त नहीं हो सकता है"– लाल बहादुर शास्त्री

धरती को महकाएँ

बगिया के फूलों को देखो ,
कैसे खुश खुश रहते हैं ।
आँधी हो पानी हो चाहे,
सब को हँस हँस सहते है ।

सूरज की किरणों को देखो ,
रोज धरती पर आती है ।
अंधकार को दूर भगाकर ,
सारा जग चमकाती है

दीपक को देखो कैसे यह ,
हरदम जलता रहता है ।
अपना अंतर जला–जला कर ,
रौशन जग को करता है ।

आओ हम भी इंसा बनकर ,
जग मे अपना नाम कमाएं ,
अच्छे सच्चे काम करें और
इस धरती को महकाएँ ।

विरेन्द्र सिंधू
ले.कर्नल
जी एस ओ 1 (प्रशिक्षण)
मुख्यालय मध्य कमान
56 ए पी ओ

"धन, शक्ति और दक्षता केवल जीवन के साधन हैं खुद जीवन नहीं"– सर्वपल्ली डॉ. राधाकृष्णन

खोयीं खुशियाँ

रास्ते हैं बहुत ,
मगर मंजिलों का पता नहीं,
जिंदगी जीते हैं हम,
पर खुशियों का पता नहीं ।

लोभ, मोह, माया पर टिकी
जिंदगी की बिसात ।
क्षणिक सुख पाते हैं हम
होता है यह भ्रमजाल
समय बीता व भ्रम टूटा ।
पर तब दिखती नहीं
खुशियॉ आस–पास

क्योंकि सच्चाइयाँ महसूस करने को हैं बहुत
मगर संवेदनाओं का पता नहीं ।
जिंदगी जीते हैं हम,
पर खुशियों का पता नहीं ।

क्रोध व ईर्ष्या की बुनियाद
करती हैं जिंदगी बर्बाद ।
प्रेम व भाईचारा लगती है बेकार
पर जब करते हैं खुशियों की तलाश
खुद को पाते हैं दुखी व निराश।

क्योंकि संभलने के अवसर हैं बहुत
मगर आत्मबोध का पता नहीं
जिंदगी जीते हैं हम,
पर खुशियों का पता नहीं ।

राजीव कुमार
सहायक लेखाधिकारी
सहायक स्थानीय लेखा परीक्षा कार्यालय
फतेहगढ़

''ज्ञानी वह है, जो वर्तमान को ठीक प्रकार समझे और परिस्थिति के अनुसार आचरण करे'' – विनोबा भावे

रिश्ते

बहुत नाजुक है ये, इनको संभालिए ।
ये न ढल पायें तो खुद को इनमें ढालिए ।
जीवन की पूँजी है सारी बस यहीं
रिश्ते हैं कांच के, प्यार से पालिए

रिश्ता माँ का है, सबसे कीमती रतन,
माँ ने पाला है हमको, करके लाखों जतन ।
जिसने उम्र भर छावँ और फल ही दिए ,
ममता के इस वृक्ष को प्यार से संभालिए ।

बेटियों से ही जीवन में है बहार,
माँ बहन, पत्नी, बेटी के रूप में लुटाती हैं प्यार ।
हाथ कोई नापाक सा गर इन पर उठे,
फिर सोचना नहीं , हाथ तोड़ डालिए ।।

रिश्ता हिंदी से है हमारा बड़ा अनमोल,
हिंदी में ही बोले थे हमने पहले तोतले बोल।
अंग्रेजी की झूठी श्रेष्ठता को छोड़कर ,
दौड़ के हिंदी को संभालिए और बचाइये ।।
हिंदी से अपने रिश्तों को निभाइये ,
कसम है तुम्हें भारत के आन की,
हिंदी को बचाइये हिंद को बचाइए
हिंदी दिवस की जगह हिंदी वर्ष मनाइये ।

विजय अग्रवाल
सहा लेखा अधिकारी
का. र.ले.प्र.नि. (म.क.) लखनऊ

''पुस्तकें वो साधन हैं जिनके माध्यम से हम विभिन्न संस्कृतियों के बीच पुल का निर्माण कर सकते हैं.''– सर्वपल्ली डॉ. राधाकृष्णन

पता नहीं क्यूँ और किस लिये जिये जा रहे हैं हम

घर से दफ्तर और दफ्तर से घर
बस इसी चक्रव्यूह में फंसे जा रहे हैं हम ।
खून हो गया है देश का सफेद
बस और बस इसी के लिये सफेदपोशों को ढोये जा रहे हैं हम ।।
पता नहीं क्यूँ और किस लिये जिये जा रहे हैं हम ।

विष पीता हुआ अर्जुन, ठहाके लगाता दुःशासन
अभिमन्यु को शहीद होते देखे जा रहे हैं हम ।
करते हुए इंतजार एक और 'कृष्ण' का
बस रावणों को बार–बार पूजे जा रहे हैं हम ।।
पता नहीं क्यूँ और किस लिये जिये जा रहे हैं हम ।

शतरंज की बिसात पर मात के भय से ,
वजीरों को बार बार बदले जा रहे हैं हम ।
कहीं पिछड़ न जायें कुर्सी की दौड़ में,
बस इसी डर से खोखले वादे पर वादे किये जा रहे हैं हम ।।
पता नहीं क्यूँ और किस लिये जिये जा रहे हैं हम ।

पाश्चात्य संस्कृति की अंधी दौड़ में शामिल,
संस्कृति विहिन होते जा रहे हैं हम ।
कहीं खो न जाए राष्ट्र भाषा अंग्रेजियत के जाल में
बस और बस इसी डर से हिंदी दिवस मनाये जा रहे हैं हम ।।
पता नहीं क्यूँ और किस लिये जिये जा रहे हैं हम ।

एस सी अस्थाना
लेखाधिकारी – 8326528
का. वे.ले.का.(अ.श्रे.)
डी0आर0सी0. फैजाबाद

राष्ट्र–मान

प्रथम वंदन गणपति का, माँ शारदे का वंदन है ।
सभी देवी देवताओं का, निर्मल मन से नमन है ।
देश के शूरवीरों का, देश के कर्मवीरों का,
ईमानदार फकीरों का, हृदय से अभिनंदन है ।।

देश के विकास में, सबका प्रयास हो,
सबको खुशहाली मिले, सबका आवास हो।
जाति–धर्म भेद–भाव, खत्म हो सारा अभाव
गाँव–गाँव शहर –शहर , एक सा विकास हो।।

न कोई घमंड हो, न कोई पाखंड हो
आत्मगौरव सबका बढ़े, दिल न खंड–खंड हो ।
हर तरफ हरियाली हो, घर–घर में खुशहाली हो ।।
लहराये तिरंगा सदा, अपना देश अखंड हो ।।

साधु संतों ने यहाँ के , दुनिया को दिया है ज्ञान,
आधुनिक विज्ञानियों ने , देश का बढ़ाया मान ।
नेपाल, भूटान, चीन, जापान, अमेरिका और अफगानिस्तान ,
सबने लिया है मान, भारत देश है महान ।। –2
जय–जय हिंद, जय हिंदुस्तानी ।
जय जय जय, मंगलजयी विज्ञानी ।।

के के वर्मा
व. लेखापरीक्षक
का. –र ले प्र नि (म.क.) लखनऊ

"हिन्दी को अपनाए बिना राष्ट्रीय एकता संभव नहीं है"– आचार्य कृपलानी

अराजकता

देश के कुछ हिस्से में , अनावृष्टि इस कदर छायी
कि किसानों ने जिंदगी से बेहतर, मौत पायी ।
देश की बदकिस्मती देखिए–
कि नेताओं के बीच, इस मौत पर राजनीति गरमायी ।
इस पर विपक्ष ने सरकार को घेरा ,
तो सरकार ने विपक्ष को , फिक्स कर तोड़ा ।
जब विपक्ष, अविश्वास मत लाया ,
तो सरकार को फिक्सिंग याद आया ।
कुछ ने स्पॉट फिक्सिंग कर, तबियत खराब किया,
तो कुछ ने पूरी फिक्सिंग कर , सदन से वाक आउट किया ।
फिर सरकार चिल्लायी –
हमने विरोधियों को , मुँह के बल गिराया ।
सूखे की मार ऐसी, कि लोग दाने–दाने को तरस रहे थे,
जबकि सरकारी अनाज, बाहर पड़े–पड़े सड़ रहे थे ।
जब मीडिया ने केंद्र सरकार का ध्यान दिलाया,
तो उसने राज्य सरकार का हाथ बताया ।
कुछ ने तो इसमें, विरोधियों का हाथ बताया।
कोर्ट ने कहा, बाहर पड़े अनाज गरीबों में बँटवाओं,
मंत्रीजी ने कहा, इसके लिए तो कुछ दिलवाओ ।
जब कोर्ट ने दिखाई सख्ती ,
तो मंत्रीजी ने कहा लो, अभी फ्री में बँटती ।
यहाँ किसान सूखे से लड़ रहे थे,
मंत्रीजी आई सी सी अध्यक्ष पद के लिए लड़ रहे थे ।
सूखे की मार क्या कम थी, जो बाढ़ की मार आयी ,
देख बाढ़ का मंजर , रोया मेरा दिल बंजर ।
बाढ़ ने तबाही ऐसी मचाई, कि देख सरकार भी घबराई ।
मैंने सोचा सरकार क्यों घबराई ,
इसमें तो सरकार की बहार आई ,
क्योंकि इसी में तो है उसकी भलाई,
अब बाढ़ के नाम पर होगी कमाई

एक पुराने नेता ने नये नेता से कहा–
चलो बाढ़, कुछ तो राहत लेकर आई,
नया पड़ा असमंजस में, बाढ़ राहत लेकर आई ।
पुराना बोला अरे मूर्ख! तुझे यह बात समझ नहीं आई ,
जो राशि राहत की होगी, वही तो होगी अपनी कमाई ।
क्योंकि खर्च करेंगे चौथाई , बाकी सब अपनी कमाई।
पिछली राहत से बंगला खरीदा था
अब की राहत से कुछ और खरीदेंगे ।
बाढ़ पीड़ित को देखकर , हमें आई रुलाई,
कहीं है बर्बादी तो कहीं, अपनों से जुदाई ।
कहीं भूखे तो कहीं, नंगे पड़े दिखाई ,
जब खाने की बात आई, तो कुछ नहीं था भाई ।
था केवल हर तरफ पानी, फिर भी पीने की आफत आई,
कहीं बच्चे तो कहीं, बूढ़े की कराह पड़ी सुनाई।
इस पर भी किसी को , दया नहीं आई ।
इंसान तो इंसान, जानवरों की भी सामत आई ।
क्योंकि तीन दिनों के बाद भी , कोई राहत नहीं आई ।
कुछ केंद्र ने खाया, कुछ राज्य ने खाया ,
बाकी जो बचा, तो छोटे भैयों ने खाया ।
जब बाढ़ पीड़ित का नंबर आया,
तो सड़ा अनाज पाया ।
हे देशवासियों, अब तो जग जाओ ,
अपने देश को, इस लूट से बचाओ ।
ऐसे नेता को मार भगाओ,
जातिवाद, धर्मवाद और लूटवाद को दूर भगाओ ,
भ्रष्ट नहीं ईमानदार को लाओ ।

श्री राजू कुमार
व.ले.परीक्षक
का. र ले प्र नि.(म.क.) लखनऊ

"सौभाग्य उन्हीं को प्राप्त होता है, जो अपने कर्तव्य पथ पर अविचल रहते हैं" – प्रेमचंद

जुनून

दंश दिया छोटे बच्चों को, पापी दहशतगर्दों ने,
छीन जिंदगी बर्बरता से जेहाद के इन नामर्दों ने ।
पेशावर की शिक्षा–शाला, आज बनी क्यों रक्तिम नाला,
कल जो फूल चमन में खिलते,ना जाने कितने दिल मिलते ।।
माँ की आँखें खोज रहीं थी, ममता के इन लालों को,
बुझा दिये तुमने चिराग, जाने कितने घरवालों के,
सुन–ए– आतंकवाद , ना छूटेगा दामन से तेरे दाग ,
नफरत में सैकड़ों घर के क्यों, बुझा दिये तूने चिराग,
बच्चों को मारकर, तूने लगाई है वो आग,
तरसेगा अब मिलने को खुद, अपनों से ये जेहाद ।
जल जाएगा तू भी इस जिल्लत की ज्वाला में,
जब मयस्सर भी ना होगी तुझे शबनम,
बुझाने को हलक की प्यास ।।

कच्चे धागे

राखी के ये कच्चे धागे,
इनका मोल जगत से आगे,
मुझको इतना मान मिला है,
राखी का अभिमान मिला है,
कहीं अगर मैं राजा होता,
द्रव्य रत्न से से झोली भरता,
हर गम से महफूज कराता,
दुनिया से गम दूर भगाता ।
पर मैं मानव सहज भाव–मन,
अर्पण बस कर सकता तन–मन ।
हर पल बरसे खुशी ज्यों ,
त्यों बरसे घन नेह,
दुख दर्द सब दूर हों,
मिले सभी का नेह ।

अमर सिंह
व.लेखा परीक्षक
का. लेखाधिकारी वि./यां. एवं परियोजना
लखनऊ

आगाज

क्रंदन है चहुं ओर आज क्यों, में मानव बेहाल ,
विस्मित होकर देख रहा क्यों , चिंतन खड़ा निढाल ।
आज अस्मिता की खातिर, क्यों बेटी मारी जाती है,
क्यों मानव के मन में श्रद्धा, सिसक–सिसक मर जाती है ।।
प्यारी सी बिटिया जब आँगन में, दो मीठे बोल सुनाती है,
तब जन्नत फीकी लगती है, अमृत रस बरसाती है ।
ये बेटी लक्ष्मी –गौरी है, दुर्गा, शक्ति, सरस्वती भी,
मत तोड़ो जीवन की कलिका, सृजन , स्नेह और शक्ति की ।।
अमर खड़ा है दोराहे पर, भ्रमित निरंतर सोच रहा,
जो जीवन का पथ चिरंतन, मानव मन क्यों भूल रहा ।।

अमर सिंह
व.लेखा परीक्षक
का0 लेखाधिकारी वि./या. एवं परियोजना
लखनऊ

पर्यावरण बचाओ

ये धरा हमारी माँ समान, हम सबके बसते इसमें प्राण
हम चाहे जितने हो महान, इक दिन मिट जाएंगे निशान ।
क्यों करते ऐसे हम हैं काम, जिससे प्रकृति होती विराम,
गर्मी बढ़ती बढ़ता अकाल, सूखी धरती सूखा है ताल ।
गर पिघली बर्फ होगा विनाश, सागर बढ़कर होगा विशाल,
जल में होकर न मिटेगी प्यास , न होगी तब हरियाली ये पास ।
पर्वत झरने न होंगे खास, मिटता जीवन खोजेगा आस,
रो–रो धरती यह कहेगी बात, माँ की ममता अब नहीं है पास ।
बचने की इनसे गर हो आस, न करो प्रदूषण का प्रयास ,
फैलाओ ज्ञान का प्रकाश, करो पर्यावरण का विकास ।
पर्यावरण दिवस है सबसे खास, आओ मिलकर हम करें प्रयास ,
वृक्ष लगायें हर घर के पास , हम ही इस धरती माँ की आस ।

प्रभात रंजन सिंह
व.ले.प.
का. स्था.ले.प.कार्या.(भंडार)
कानपुर

"प्रांतीय ईर्ष्या–द्वेष दूर करने में जितनी सहायता हिन्दी प्रचार से मिलेगी, दूसरी किसी चीज से नहीं" ।– सुभाष चन्द्र बोस

चाँद की सीख

चंचल है चाँद धवल चाँदनी, देती है जग को, शीतल रोशनी,
चाँदी सी किरणें हैं, उज्ज्वल है मुखड़ा ,धरती पर आता, हटाता अंधेरा
सूरज की किरणें फैलाती जब सवेरा , दिखता नहीं इसका सुंदर ये चेहरा
सिमटने पर किरणों के होती है शाम, हंसता हुआ तब दिखता है चाँद
फिर आती अमावस्या की काली वो रात,छोड देती है किरणें तब चाँद का साथ
सहमा हुआ चाँद कुछ भी न कहता, किरणों के आने की , राह है तकता
आती है किरणें जब चाँद के पास , खुश होकर हमें वह पढ़ाता है पाठ
निराश न होना न होना उदास, किरणों का खेल यह जीवन है आस
गम के अंधियारे यूँ छट जाएंगे, खुशी के उजाले तब फिर आएंगे ।
बिखेरो सदा सच की चाँदनी, बनोगे तभी तुम आदर्श आदमी ।
चंचल है चाँद धवल चाँदनी, देती है जग को शीतल रोशनी ।

प्रभात रंजन सिंह
व.ले.प.
का. स्था.ले.प.कार्या.(भंडार)
कानपुर

''प्रत्येक व्यक्ति की अच्छाई ही प्रजातंत्रीय शासन की सफलता का मूल सिद्धांत है''।
–राजगोपालाचारी

हिंदी की प्यास

मन में एक आस है, हिंदी की प्यास है ।
पीने को है बहुत, पर अंतर्मन उदास है ।।
लोग अँग्रेजी में जीते हैं,
अँग्रेजियत को पीते हैं ।
चारों तरफ तो अंग्रेजियत की, आग है लगी ,
एक मुझमें ही प्यास जगी, तो क्या जगी ।
सबके मन में प्यास जगे तो ,
समझो सफल प्रयास है ।

मन में एक आस है, हिंदी की प्यास है ।
पीने को है बहुत, पर अंतर्मन उदास है ।।
सभी मिलकर जियें ,
तो सारा जहाँ एक साथ है ।
सभी मिलकर पियें,
तो अनुपम, सुखद अहसास है ।
हिंदी का अमृत प्याला कभी न होगा रिक्त ,
हिंदी हृदय देश में पूर्ण यह विश्वास है ।
मन में एक आस है, हिंदी की प्यास है ।
पीने को है बहुत, पर अंतर्मन उदास है ।।

दिनेश कुमार खरे
लेखा परीक्षक
का. स्था .ले.प.अ. (भं)
आ.भं., किला, इलाहाबाद

क्योंकि वह गरीब था

जीवन के पथ पर वह चल न सका,
क्योंकि वह गरीब था ।
लोग अमीर थे, उनके पास गाड़ी थी,
फिर भी उसको नहीं बिठाया,
क्योंकि वह गरीब था ।
लोग शिक्षावान थे, कहलाते विद्वान थे,
फिर भी उसको नहीं पढ़ाया ,
क्योंकि वह गरीब था ।
लोग धन–धान्य थे, खाते पकवान थे
फिर भी उसको नहीं खिलाया,
क्योंकि वह गरीब था ।
गरीब को गरीब देखकर क्यों
लोगों को खुशी मिलती है ?
इधर कई दिनों से वह गली–गली,
और सड़क–सड़क भटक रहा था ।
चिथड़ा वस्त्र शरीर पर लटक रहा था ।
परेशान सा, हताश सा, विश्रांत सा,
शायद वह कुछ खोज रहा था ।
पर वह क्या कर सकता था
क्योंकि वह गरीब था ।
शायद किसी को पता नहीं,
पर मुझको यह मालूम था ।
कि, उसकी बेटी जवान हो गयी है,
और वह उसके लिए वर खोज रहा था ।
पर कौन मिले उसको,
क्योंकि वह गरीब था ।

श्रीमती रीना खरे पत्नी
श्री दिनेश कुमार खरे
लेखा परीक्षक
का. स्था.ले.प.अ. (भं)
आ.भं., किला, इलाहाबाद

"शिक्षा सबसे अच्छी मित्र है.एक शिक्षित व्यक्ति हर जगह सम्मान पता है. शिक्षा सौंदर्य और यौवन को परास्त कर देती है."-चाणक्य

जिंदगी के रंग

कभी पतझड़ तो कभी बहार है जिंदगी
कभी गमों की रेत तो कभी खुशियों का सागर है जिंदगी ।।
कभी उलझी तो कभी सुलझी हुई एक पहेली है जिंदगी
कभी बेगानी तो कभी अपनी है जिंदगी ।।
कभी बोलती तो कभी बेजुबान है जिंदगी
कभी नकद तो कभी उधार है जिंदगी ।।
कभी खोया हुआ ताज तो कभी सम्मान है जिंदगी
कभी जीत तो कभी हार है जिंदगी ।।
कभी तन्हा तो कभी महफिल है जिंदगी
कभी अपनों से दूर तो कभी बेगानों के पास है जिंदगी।।
कभी सुहानी सुबह तो कभी मायूस रात है जिंदगी
कभी पतझड़ तो कभी बहार है जिंदगी ।।

अवधेश कुमार
लेखापरीक्षक
का. वे.ले.का.(अ.श्रे.)
डी. आर. सी. फैजाबाद

ठहरा पंथी

तू ठहरा क्यूँ है, तू उलझा क्यूँ है?
तू डरता क्यूँ है, ऐसा करता क्यूँ है?
तू चलता क्यूँ नहीं , कुछ बनता क्यूँ नहीं ?
तू लड़ता क्यूँ नहीं, कुछ तोड़ता क्यूँ नहीं ?
अंधकार को चीर दे, और आगे बढ़ना सीख ले
पक्षियों को देखकर , उड़ना अब तू सीख ले,
अपने डर को मोड़ दे, इस ठहराव को छोड़ दे ,
गुरु का तू आशीष ले, माता–पिता को शीष दे ,
मोह–बंधन को त्याग कर , और उलझन को काटकर ,
पथ को तू भांपकर , अपने लक्ष्य को प्राप्त कर,
नवजीवन को प्राप्त कर, अपने लक्ष्य को प्राप्त कर ।।

अरविंद कुमार सेहतिया
लेखापरीक्षक
का. वे.ले.का.(अ.श्रे.)
डी. आर. सी. फैजाबाद

''कोई चुनाव मत करिए. जीवन को ऐसे अपनाइए जैसे वो अपनी समग्रता में है''.– ओशो

जय हिन्द ही नहीं जय हिन्दी भी

युग बीता अंग्रेज गये , क्यों अंग्रेजी अब भी है रानी ,
दासी बनकर हिंदी बोली, भरेगी कब तक उसका पानी ।
गैरों के न हम कपड़े पहनें, न औरों का भोजन खाते ,
क्यों चोट न लगे स्वाभिमान को, गैरों की भाषा अपनाते ।
नाम लंच है खाते मगर, हिंदुस्तानी खाना यारो ,
हाय हेलो है आना उनका , सी यू है जाना यारो
मातृभूमि की मिट्टी अब सोंधी महक तुम पहचानों ।
रश्मि रथी पर बैठ जरा, भारत भारती को जानो ।
कामायनी से उर्वसी तक, काव्य रस का पीते प्याला ,
जो है तेरा आकुल अंतर, मधुशाला में मधुबाला ।
रहीम , मीरा, कबीर, जायसी, सूर, केशव, तुलसीदास,
हैं सत सइया के दोहे, पढ़ोगे जितना बढ़ेगी प्यास ।
देश अपना भाषा अपनी, चिर स्वतंत्र जल थल अपने,
याद करो बापू की हसरत, आज के भारत के सब सपने ।
हां बुरा नहीं है कोई ज्ञान, इंगलिश जानो अरबी जानो,
पर अपनी मिट्टी अपनी होती है , हिंदी को भी अपना मानो,
बंगाली मराठी और मद्रासी सिंधी भी,
हिन्द देश की हिन्दी भाषा, जय हिन्द ही नहीं जय हिंदी भी ।
जय हिन्दी, जय हिन्द॥

सुरेश कुमार
लिपिक
का. र.ले.प्र.नि.
(म.क.) लखनऊ

''लोग अपनी–अपनी मातृभाषा की रक्षा करते हुए सामान्य भाषा के रूप में हिन्दी को ग्रहण करें'' अरविंद घोष

हमारा कार्यालय

ईश्वर की स्तुति करना सिखाती है हिंदी
हमारी संस्कृति का गान है हिंदी

भारत और हम सब की शान है हिंदी
भारत की परंपरा और सम्मान है हिंदी ।।

प्रधान रक्षा लेखा कार्यालय
दिव्य पुंज सा चमक रहा ।
प्राकृतिक घटाओं के द्वारा ,
उच्च मनोहर दमक रहा ।।

संपूर्ण कमान में चमक रहा है,
यह लखनऊ का कार्यालय ।
सम्मान प्रतिष्ठा हो नित धनी,
कोशिश करता यह कार्यालय ।।

सब कर्मचारी अति कर्मठ हैं ,
उनका कितना गुण गान करें ।
कोमल स्वभाव सुंदर बाणी,
उत्तम सेवा का दान करें ।।

कार्यालय अपना कर्मक्षेत्र,
हम सबकों प्राणों से प्यारा है,
हम सब सहकर्मियों का चमका,
एक अनमोल सितारा है ।।

उन अधिकारियों के चरणों में,
हम श्रद्धा सुमन चढ़ाते हैं ।
आशीष उन्हीं का पा करके,
हम मल्टी परपज बन जाते हैं ।।

सुरेश कुमार
लिपिक
का. र.ले.प्र.नि.
(म.क.) लखनऊ

तुम इम्तेहान ले लो मेरा

यदि धूप बनो तुम सावन की,
मैं ताप तुम्हारा सह लूँगा ।
तुम छाया बनकर भरमाओ,
मैं बाँह तुम्हारी गह लूँगा ।।

यदि धूल बनो तुम मरुस्थल की,
मैं रज से झोली भर लूँगा ।
यदि शूल बनो वन उपवन की,
पीड़ा को रोली कर लूँगा ।।

यदि ज्योति चुराओ नयनों की,
मैं आँसू पीकर जी लूँगा ।
यदि प्रीति छिपाओ भावों की ,
मैं पलकों को भी सी लूँगा ।।

तुम टूटे दिल से रार करो,
मैं आह तुम्हारी ले लूँगा ।
पतवार बनाकर यादों की,
मैं जीवन नौका खे लूँगा ।।

जब हृदय दिया पीड़ा लेकर,
मैं साथ तुम्हारे रह लूँगा ।
यदि धूप बनो तुम सावन की,
मैं ताप तुम्हारा सह लूँगा ।।

तुम इम्तेहान ले लो मेरा,
मैं हर सवाल हल कर लूँगा ।
यदि धूप बनो तुम सावन की,
मैं ताप तुम्हारा सह लूँगा ।।

राम खिलावन
एम टी एस
का. र.ले.प्र.नि.
(म.क.लखनऊ)

जय कलाम

मैं भी सिंकदर महान बनूँगा, मैं भी अब्दुल कलाम बनूँगा
मैं भी सिंकदर महान बनूँगा,
मैं भी अब्दुल कलाम बनूँगा
जो देश को नई ऊँचाइयों तक ले जाए
मैं भी वो इंसान बनूँगा ।

मील का पत्थर हो, या
हो माउण्ट एवरेस्ट की ऊँचाई,
मैं भी देश को उन ऊँचाइयों तक ले जाऊँगा,
जहाँ पहुँच ना सके , किसी देश की परछाई ।
मैं भी कुछ ऐसा काम करूँगा
मैं भी सिंकदर महान बनूँगा,
मैं भी अब्दुल कलाम बनूँगा

दिन हो चाहे या चाहे हो रात,
धूप हो चाहे या चाहे हो छाँव,
देश की जनता की इतनी सेवा करूँगा,
कि गर्व करें मुझ पर हर इक शहर, हर इक गाँव
मैं भी दो महान काम करूँगा
मैं भी सिंकदर महान बनूँगा,
मैं भी अब्दुल कलाम बनूँगा

मैं कोई वैज्ञानिक तो नहीं,
जो देश की उन्नति विज्ञान में करूँगा,
मैं कोई कवि तो नहीं
जो देश की अभिव्यक्ति कविता में करूँगा
मैं तो छोटा सा एक आम आदमी हूँ
बस सच्चे दिल से देश और देश की जनता की सेवा करूँगा
मैं भी देश के लिए मेहनत दिन और रात करूँगा
मैं भी सिंकदर महान बनूँगा,
मैं भी अब्दुल कलाम बनूँगा

जन्म हो ऐसा जो जन्मभूमि का नाम कर जाए
मरण हो ऐसा जो मातृभूमि का नाम कर जाए
कहे 'सुनील शर्मा' अपनी कलम की लेख से
बनो वो इंसान अपने देश का
जिसे देश का ही नहीं बल्कि इंसान याद करे विदेश का
मैं भी अपने भारत वतन की नई कहानी लिखूँगा,
देश के लिए अमूल्य निशानी बनूँगा,
मैं भी सिंकदर महान बनूँगा,
मैं भी अब्दुल कलाम बनूँगा

सुनील शर्मा, संदेशवाहक
का. एम ई एस मुख्य अभियंता
मध्य कमान, लखनऊ

स्वच्छ भारत अभियान

2 अक्टूबर, 2019 बापू की 150 वीं जयंती एवं सम्पूर्ण भारत गंदगी से मुक्त । वास्तव में कितनी बड़ी श्रद्धांजलि होगी बापू को, उनकी 150 वीं जयंती के अवसर पर ।

निश्चय ही हमारे प्रधानमंत्री जी का सपना देश के पर्यावरण की दशा एवं दिशा बदल सकता है लेकिन इसको कार्यान्वयन करने एवं सफल बनाने के लिए जन सहभागिता जरूरी है ।

प्रधानमंत्री श्री मोदी जी ने 2 अक्टूबर 2014 को जब इस अभियान की शुरुआत की थी तब निश्चित ही उनके सामने देश के शहरों एवं गांवों की गलियों की गंदगी सामने होगी । जिसको देखकर देश के हर नागरिक को पीड़ा होना स्वाभाविक है और यह पीड़ा और बड़ा रूप ले लेगी । जब हम आजादी के 68 साल बाद भी हम अपने गांवों एवं शहरों में आदमी को मैला ढोते देखते हैं । अपनी माताओं–बहनों को खुले में शौच करते देखते हैं । एक तरफ हम 21वीं सदी को आर्थिक विकास के मंच पर भारत की सदी बनाना चाहते हैं तो दूसरी ओर मानव विकास के नाम पर हम अपने नागरिकों को मानव जीवन की मूलभूत सुविधाओं से भी वंचित रखते हैं । यह हमारे आर्थिक विकास का सबसे बड़ा अंतर्द्वन्द्व है ।

ऐसा नहीं है कि इस अन्तर्द्वन्द्व या विरोधाभास को तोड़ने का राष्ट्रीय या अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रयास नहीं हुआ । लेकिन उनकी सफलता किन्हीं न किन्हीं कारणों से सीमित रही ।

आजादी के बाद सर्वप्रथम हमने 1954 में 'ग्रामीण स्वच्छता कार्यक्रम' शुरू करके गांवों में स्वच्छता की ओर कदम बढ़ाये । लेकिन उस समय न तो जनमानस स्वच्छता को लेकर इतना जागरूक था और न ही हमारे पास इतने आर्थिक संसाधन थे कि हमारी सरकार अपनी योजनाओं के माध्यम से गावों में शौचालयों का निर्माण करा सकती थी ।

अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी संयुक्त राष्ट्र संघ ने 1981–90 के दशक को 'स्वच्छता पेयजल एवं स्वच्छता का दशक' के रूप में मनाने की घोषणा की। हमारे देश में भी ग्रामीण क्षेत्र में स्वच्छ पेयजल के हैंडपंप लगवाने की योजना की शुरुआत की गयी जिससे ग्रामीण क्षेत्र में लाखों लोगों को स्वच्छ पेयजल उपलब्ध हो सका ।

इसी दशक में हमारी सरकार ने 1986 में 'केंद्रीय ग्रामीण स्वच्छता कार्यक्रम' की शुरुआत की जिसमें पहली बार गांवों को स्वच्छ पेयजल के साथ शौचालयों के निर्माण की शुरुआत की गयी। जिसके अंतर्गत लगाये गये हैंडपंपों का प्रयोग तो सफल रहा लेकिन कम लागत एवं गुणवत्ता के अभाव में शौचालयों का निर्माण सफल नहीं हो सका लेकिन ग्रामीण जनमानस को उसकी उपयोगिता से परिचित कराया एवं उसकी ओर प्रेरित भी किया ।

केंद्रीय ग्रामीण स्वच्छता कार्यक्रम को 1999 में 'सम्पूर्ण स्वच्छता कार्यक्रम' में बदल दिया गया और शहरों को भी स्वच्छता कार्यक्रमों के दायरे में लिया गया । क्योंकि बढ़ते औद्योगीकरण एवं शहरीकरण के कारण शहरों में स्वच्छता की स्थिति और भी दयनीय होती जा रही थी । इस कार्यक्रम से शहरों में शौचालयों, नालियों एवं जल संशोधन संयंत्र आदि का निर्माण किया गया ।

संपूर्ण स्वच्छता कार्यक्रम को 2012 में निर्मल भारत अभियान का नाम दिया गया जिसको 2 अक्टूबर 2014 को हमारे प्रधानमंत्री जी ने 'स्वच्छ भारत अभियान' में बदल दिया । पहली बार किसी प्रधानमंत्री ने जनसहभागिता की आवश्यकता को समझते हुए इसे एक अभियान के साथ जन आंदोलन में परिवर्तित करने की कोशिश की क्योंकि वह जानते हैं कि देश को स्वच्छ बनाना किसी सरकार या प्रधानमंत्री के वश की बात नहीं है ।

2 अक्टूबर 2014 को आरंभ हुए 'स्वच्छ भारत अभियान' में पहली बार सरकार की प्रतिबद्धता स्पष्ट दिख रही है । सरकार ने इसके लिए अलग से हर मंत्रालयों के अंतर्गत बजट का प्रावधान करने को कहा है । सरकार का हर विभाग इस

अभियान को सफल बनाने के लिए प्रतिबद्ध दिख रहा है । साथ ही सरकार ने पब्लिक प्राइवेट पार्टनरशिप एवं कार्पोरेट सोशल रिसपांसिबिलिटी के अंतर्गत स्वच्छ भारत अभियान के लिए शौचालयों के निर्माण एवं अवस्थापनात्मक सहयोग के लिए हाथ बढ़ाया है ।

'स्वच्छ भारत अभियान' के अंतर्गत सरकार ने निम्न विशेष लक्ष्य निर्धारित किए हैं –

1. शत प्रतिशत खुले में शौच से मुक्ति ।
2. सभी गांवों एवं स्कूलों में शौचालयों का निर्माण ।
3. मानव द्वारा मल की सफाई से मुक्ति ।
4. गांवों में स्वच्छ पेयजल उपलब्ध कराना ।
5. शहरों की मलिन बस्तियों में पक्के मकान एवं शौचालय उपलब्ध कराना ।

सरकार के अनुसार इस पर अनुमानित व्यय लगभग 66,000/– करोड़ आएगा जिसको केंद्र एवं राज्य सरकारें 75.25 के अनुपात में व्यय करेंगे । पूर्वोत्तर के राज्यों के लिए यह 90.10 के अनुपात में लागू होगा ।

निश्चित रूप से यह एक बहुत बड़ा अभियान है जो न केवल मानव को स्वच्छ पर्यावरण उपलब्ध कराएगा बल्कि इसके सामाजिक–आर्थिक उपयोगिता को भी नकारा नहीं जा सकता है ।

सामाजिक क्षेत्र में इस अभियान के दूरगामी परिणाम सामने आएंगे । यदि सरकार गांवों एवं स्कूलों में शौचालयों का निर्माण कराने में सफल होती है तो न केवल गांवों में छुआछूत की भावना कम होगी बल्कि स्कूलों में लड़कियों की भागीदारी बढ़ेगी जिससे हमारे देश में लैंगिक असमानता की खाई को पाटने में मदद मिलेगी ।

शौचालयों के निर्माण से गांवों में महिलाओं के विरुद्ध बढ़ रही अपराधिक घटनाओं पर भी नियंत्रण लगाया जा सकेगा ।

इसी प्रकार आर्थिक क्षेत्र में भी इस अभियान के अंतर्गत हुए निर्माण कार्य से लाखों लोगों को रोजगार मिल सकता है जिससे उनका शहरों की ओर पलायन भी बढ़ेगा । जिस प्रकार 1999 के बाद से राष्ट्रीय राज्य मार्गों के निर्माण ने देश के मूलभूत उद्योगों को एक नई उर्जा प्रदान की थी । उसी प्रकार 'स्वच्छ भारत अभियान' के अंतर्गत निर्माण कार्य देश की अर्थव्यवस्था को नई गति प्रदान कर सकते हैं ।

इसके साथ – साथ स्वच्छता के माध्यम से हम बहुमूल्य पर्यावरण की रक्षा कर सकते हैं जिसको हरित जी डी पी के रूप में मूल्यांकित किया जाना है ।

आजादी के पिछले दशकों में हम अपने मूल अधिकारों के लिए तो बहुत जागरूक रहे लेकिन हमने अपने मूल कर्तव्यों को नजरअंदाज कर दिया । आज समय की मांग है कि देश के नागरिक के रूप में अपने कर्तव्यों को समझें और अपनी जिम्मेदारी को ईमानदारी से निर्वहन करें तभी हम 'स्वच्छ भारत अभियान' में अपना सहयोग दे सकते हैं और भावी पीढ़ी को कह सकते हैं कि–

सर्वे भवंतु सुखिन सर्वे संतु निरायमा ।

सर्वे भद्राणि पश्यन्ति , मा कश्चिद दुख भाव भवेत ।।

त्रिभुवन नारायण सिंह,
सहा लेखा अधिकारी
कारू र.ले.प्र.नि.
(म.क.) लखनऊ

स्वच्छ भारत अभियान

स्वच्छता के महत्व को अगर किसी व्यक्ति ने अपना जीवन दर्शन माना है, तो वे हैं भारत के राष्ट्रपिता श्री मोहनदास करमचंद गाँधी । इनके अनुसार स्वच्छता का महत्व केवल शारीरिक सफाई तक ही सीमित नहीं है वरन् यह बहुआयामी है । इसका प्रभाव व्यक्ति से होकर समुदाय, समाज, राज्य, राष्ट्र एवं वैश्विक स्तर तक पड़ता है । गाँधी जी ने इसके लिए एक बार कस्तूरबा जी को घसीटते हुए आश्रम से बाहर कर दिया था जब उन्होंने एक ईसाई क्लर्क की गंदगी को साफ करने से मना कर दिया था। गाँधी जी ने कांग्रेस के अधिवेशन एवं अपने आश्रमों में पायखाना साफ करना अनिवार्य बना दिया था । गाँधी जी ने स्वच्छता को जीवन शैली मानकर अपनाने का सुझाव दिया था ।

आइए अब नजर डालते हैं कुछ आंकड़ों पर यथा संयुक्त राष्ट्र संघ की एक रिपोर्ट के अनुसार पूरे विश्व में इस समय लगभग 2.5 अरब लोग खुले में शौच करते हैं। जबकि अकेले भारत में लगभग 65 करोड़ लोग खुले में शौच करते हैं जो कि पूरे का लगभग एक तिहाई है । इसी रिपोर्ट के अनुसार अगर देशों के अनुसार सूची तैयार की जाए तो भारत का स्थान प्रथम होगा। इसके राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वे–III के अनुसार सफाई कार्य में लगे लोगों में से लगभग 90 प्रतिशत लोग संक्रामक रोगों की चपेट में आकर 50 वर्ष से पहले ही मृत्यु को प्राप्त हो जाते हैं । विश्व बैंक व विश्व स्वास्थ्य संगठन की रिपोर्ट के अनुसार गंदगी से भारतीय अर्थव्यवस्था को तकरीबन 54 अरब डॉलर (अमेरिकी) जो कि 2006 में भारतीय अर्थव्यवस्था के सकल घरेलू उत्पाद (जी डी पी) का 6.4 है का नुकसान होता है । इन्हीं सब तथ्यों का संज्ञान लेते हुए भारत सरकार द्वारा 2 अक्टूबर 2014 का बापू जी के जन्मदिवस के सुअवसर पर स्वच्छ भारत आरंभ किया गया ।

स्वच्छ भारत अभियान एक परिचय :

स्वच्छता के संदेश को जन–जन तक पहुँचाने के लिए प्रधानमंत्री माननीय श्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में यह अभियान 2 अक्टूबर को शुरू किया गया । इसका उद्देश्य 2 अक्टूबर 2019 (गाँधी जी 150वीं जयंती) तक भारत के प्रत्येक गली, गाँव, तहसील,शहर,नगर, नदियां आदि को स्वच्छ बनाना है । इसमें स्वच्छता के व्यापक प्रभावों पर बल दिया गया है जिसमें कि सामाजिक प्रभाव, आर्थिक प्रभाव, सांस्कृतिक प्रभाव, पर्यटन उद्योग पर पड़ने वाले प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष सुधार सम्मिलित हैं ।

इस अभियान को राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी को समर्पित किया गया है । इसीलिए इसका लोगो गाँधी जी का ''ऐनक'' रखा गया है एवं ध्येय वाक्य ' एक कदम स्वच्छता की ओर' रखा गया है । इस अभियान के अंतर्गत प्रधानमंत्री मोदी जी ने सभी व्यक्तियों से प्रत्येक सप्ताह में 2 घंटे व प्रत्येक वर्ष में 100 घंटे सफाई कार्य में लगाने का आह्वान किया है । यह सभी संगठित क्षेत्रों, असंगठित क्षेत्रों, सरकारी कार्यालयों, राजनैतिक भवनों, नगरपालिकाओं,ग्राम पंचायतों में लागू होगा ।

आज भी भारत की लगभग 68 प्रतिशत आबादी गांवों में निवास करती है जिसमें से 60 प्रतिशत के पास शौचालय नहीं हैं। इसके लिए बड़ी संख्या में संसाधनों की आवश्यकता पड़ेगी । इसके लिए सरकार वर्ष 2014 –2019 तक लगभग 1.96 लाख करोड़ खर्चा करेगी । संसाधनों की पूर्ति के लिए स्वच्छ भारत कोष की स्थापना की जाएगी जिसमें कोई व्यक्ति या संस्था पैसा जमा कर सकेगा । सरकार इसमें जमा पैसे पर कर में राहत देने पर भी विचार कर रही है । इसके साथ ही सरचार्ज (सेस) अधिभार (स्वच्छ सेस) पर भी विचार कर रही है ।

निजी क्षेत्र की कंपनियां कारपोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व (सी एस आर) के तहत अपने तीन विगत वर्षों के लाभ का 2 प्रतिशत स्वच्छता एवं पेयजल संबंधी मुद्दों पर व्यय कर सकती है । इसके तहत सम्मिलित (स्वीकृत) विषयों में स्वच्छता पेयजल सीवेज ट्रीटमेंट टॉयलेट निर्माण को भी स्थान दिया गया है । निजी क्षेत्र के अलावा गैर सरकारी संगठनों, सिविल सोसायटी, सामुदायिक संस्थानों को भी इसमें शामिल किया गया है ।

अतः स्वच्छ भारत अभियान पहले के सरकारी कार्यक्रमों से इतर कहीं अधिक लचीला, विस्तृत, व्यवहारिक हैं। चूँकि इसका

नेतृत्व स्वयं प्रधानमंत्री कर रहे हैं इसलिए इसने जल्द ही एक अभियान का रूप ले लिया है ।

विभिन्न क्षेत्रों में इसके प्रभाव :

स्वास्थ्य – भारत में संक्रामक रोग यथा हैजा, डायरिया, काला जार, निमोनिया, जापानी इंसेफलाइटिस आदि से मरने वालों की संख्या प्रतिवर्ष 50 लाख से ज्यादा है । इनका प्रमुख कारण सफाई का न होना है । जी डी पी में नुकसान का 72 प्रतिशत अकेले स्वास्थ्य पर होता है ।

स्वच्छता अभियान के तहत अब लगभग 50 लाख टायलेट बनाए जा चुके हैं । शहरी क्षेत्रों में भी लगभग 20 लाख टायलेट बनाए गए हैं । विश्व स्वास्थ्य संगठन की रिपोर्ट के अनुसार अगर सभी भारतीय खाने से पहले साबुन से हाथ धोएं तो बीमारी 50 प्रतिशत तक कम हो जाएगी ।

सामाजिक प्रभाव– महिला आयोग एवं नेशनल अपराधिक रिकार्ड ब्यूरो के अनुसार 50 प्रतिशत से अधिक महिलाओं के साथ घटनाएं शौच नित्यकर्म से निवृत्त होने जाते समय होती हैं । अतः टॉयलेट बनने से इसमे सुधार होगा।

इस अभियान के तहत मैला ढोने की प्रथा को 2019 तक खत्म करना है ताकि इस अमानवीय कार्य में लगे समुदायों का जीवन गरिमापूर्ण हो सके और वे भी समाज की मुख्य धारा में शामिल हो सकें । समाज के सभी वर्ग जब आधुनिक शौचालयों में नित्यकर्म करेंगे तभी समाज संतुलित विकास कर सकेगा ।

आर्थिक प्रभाव – विश्व व्यापार संघ की रिपोर्ट के अनुसार भारत का सफाई बाजार 2020 तक लगभग 60–70 अरब डॉलर का हो जाएगा। विभिन्न बहुराष्ट्रीय कंपनियां यथा हिंदुस्तान लीवर, रिकिट, डेटॉल इस दिशामें प्रयास कर रही है । इससे लाखों रोजगार पैदा होने की संभावना है ।

पर्यटन पर प्रभाव – सफाई के अभाव में भारत पर्यटन राजस्व का एक बड़ा हिस्सा खो देता है । अगर पर्याप्त सफाई हो तो यह संख्या बढ़ सकती है । स्वच्छ भारत अभियान से अतुल्य भारत को भी बढ़ावा मिलेगा ।

सफाई में तकनीकी का प्रयोग – सोशल मीडिया तथा अन्य मीडिया के साधनों की भी इस अभियान को व्यापक बनाने में अहम भूमिका रही है ।

डिजिटल इंडिया अभियान के तहत ऐसी कई तकनीकियों का समावेश करके इस अभियान को गति दी जा सकती है । जैसे – मोबाइल एप से नजदीकी शौचालय का पता लगाना, जी पी एस ट्रैकिंग से डस्टबीन का मूवमेंट चेक करना । बिल एवं मेलिंडा गेट्स फाउंडेशन ने टॉयलेट क्षेत्र में 16 संस्थानों को सस्ता एवं टिकाऊ शौचालय बनाने पर अनुदान राशि दी ।

इसमें शुष्क शौचालय जिसमें कि पानी व उर्जा की आवश्यकता ही नहीं पड़ती है, जैविक मल ही पानी की जगह इस्तेमाल हो सकता है ।

सौर्य ऊर्जा संचालित शौचालय ऊर्जा की कमी को पूरा कर सकते हैं ।

तरल एवं ठोस अपशिष्ठ प्रबंधन में अत्याधुनिक तकनीकों का प्रयोग किया जा सकता है ।

इलेक्ट्रानिक कचरे का उचित निष्पादन करने के लिए भी नई तकनीकी का इस्तेमाल करना होगा ।

कुछ अनूठे एवं अच्छे प्रयास– भारत के कई राज्यों जैसे केरल, मिजोरम, लक्ष्यद्वीप, सिक्किम में सफाई का स्तर बहुत अच्छा है ।

पुणे में सफाई कार्य में सहकारी व्यवस्था लागू की गई है जिसमें 90 प्रतिशत से अधिक महिलाएं हैं । यह मॉडल काफी सफल साबित हुआ । इसी तरह तमिलनाडु के तिरुचिरापल्ली जिले में सभी संस्थानों यथा नगरपालिका, सिटीजन, गैर सरकारी संगठन सबने मिलकर जिले को स्वच्छ बनाया ।

कंपनियां जैसे भारतीय इंटरप्राइजेज ने 10 लाख शौचालय का ठेका शुलभ इंटरनेशनल को दिया ।

इसके इलावा टी सी एस व मेदांता समूह ने भी इसमें सहयोग किया । अडानी ग्रुप भी इसमें शामिल है । इनके माध्यम से इस अभियान ने गति पकड़ी है ।

निष्कर्ष– पूर्व में भी सफाई के लिए ग्रामीण स्वच्छता मिशन , जवाहर लाल नेहरू अरबन रिनुअल मिशन, शहरी स्वच्छता मिशन , संपूर्ण स्वच्छता अभियान , निर्मल भारत अभियान जैसे बड़े मिशन लागू किए गए । परंतु कई कारणों यथा संसाधनों की कमी , जागरूकता की कमी, तालमेल की कमी से इनका प्रभाव सीमित ही रहा परंतु स्वच्छ भारत मिशन इन सबसे आगे निकल गया है ।

अभी कई चुनौतियां सरकार के सम्मुख हैं जिससे उन्हें पार पाना है । ऐसी स्थितियां जो निम्न स्वच्छता स्थिति को बनाए रखती हैं उन्हें दूर करना है । इसके लिए सामाजिक संरचनात्मक कार्यों की जरूरत पड़ेगी । तभी यह समाज के प्रत्येक वर्ग तक पहुंच पाएगा ।

जैसा कि सामाजिक चिंतक ईमाइल दुखैम ने सामाजिक तथ्य के बारे में लिखा है हमें इसे अनिवार्य बनाना होगा ताकि लोग इसे तोड़ने से डरें । जैसा कि मेट्रो और सिंगापुर में लागू है ।

अंत में प्रधानमंत्री जी के न्यूयार्क के मेडिसन स्क्वायर में दिए गए भाषण के अंश 'गांधी जी ने भारत को आजादी दिलाई, हमें देश को गंदगी से आजादी दिलानी होगी ..... अगर सवा सौ करोड़ भारतीय ठान लें कि वे गंदगी नहीं करेंगे तो दुनिया की कोई ताकत भारत को एक स्वच्छ राष्ट्र बनने से नहीं रोक सकेगी ' ।

सब मिलकर इस पर कार्य करेंगे तभी हम गांधी जी को उनके 150 वें जन्म दिवस पर स्वच्छ भारत का तोहफा दे सकेंगे ।

यशपाल सिंह
लेखा परीक्षक
का. र.ले.प्र.नि.
(म.क.) लखनऊ

" एक मूर्ख जीनियस बन सकता है यदि वो समझता है की वो मूर्ख है लेकिन एक जीनियस मूर्ख बन सकता है यदि वो समझता है की वो जीनियस है । " – डा. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम

नितोपदेश संकलन

1. यस्यार्थास्तस्य मित्राणि यस्यार्थास्तस्य बान्धवारू ।
यस्याथर्रू सा पुमांल्लोके यस्याथर्रूस च पणिडतरू ।
इस संसार की यह रीति है कि धन सम्पन्न होने पर मनुष्य के मित्रों, बंधु बांधवों की संख्या बहुत बढ़ जाती है । धन की प्रचुरता ही मनुष्य को समाज में अधिक यश दिलवाती है । धनी व्यक्ति ही शान से रह सकता है । धन सब कुछ नहीं, किंतु धन के बिना भी जीवन यात्रा पूर्ण नहीं होती । सत्य तो यह है कि इस संसार में केवल धनवान को ही विद्वान और सम्मानित व्यक्ति समझा जाता है । धनहीन व्यक्ति को सभी हीन दृष्टि से देखते हैं ।

2. समाने शोभते प्रीतिरू राज्ञि सेवा च शोभते ।
वाणिज्यं व्यवहारेषु दिव्या स्त्री शोभते गृहे ।
प्रेम और व्यवहार सदैव ही समान स्तर के व्यक्ति व परिवार से रखना चाहिए, जो व्यक्ति ऐसा नहीं करता है वह उपहास, अपमान व कष्ट का पात्र बन जाता है । व्यापार भी समान स्तर के लोगों से ही फलता फूलता है और वही स्त्री गृह की शोभा होती है जो कि समान स्तर के परिवार से संबंध रखती है । दोस्ती केवल अपने बराबर वालों से होती है । अपने से छोटे अथवा बड़े के साथ मित्रता नहीं करनी चाहिए । ऐसी मित्रता से कभी सुख नहीं मिलता ।

3. यस्मिन्देशे न सम्मानो न वृत्तिर्न च बान्धवारू ।
न च विद्यागमोडप्यस्ति वासं तत्र च कारयते ।
किसी भी व्यक्ति का सम्मान जिस क्षेत्र में न हो, उसे उस क्षेत्र को तुरंत त्याग देना चाहिए क्योंकि सम्मान के अभाव में जीवन का कोई अर्थ नहीं । जिस देश में आदर नहीं, जीने के साधन नहीं, विद्या प्राप्त करने के स्थान नहीं, वहां पर रहने का कोई लाभ नहीं क्योंकि वहां पर कोई व्यक्ति उन्नति नहीं कर सकता है ।

4. अन्यायोपार्जितं वित्तं दशवर्षाणि तिष्ठति ।
प्राप्ते चौकादशे वर्षे समूलं तद् विनश्यति ।
अन्याय, धूर्तता, बेईमानी आदि गलत ढंग से कमाकर संचित किए गए धन से सम्पन्न व्यक्ति अधिक से अधिक दस वर्षों तक सम्पन्न रहता है । ग्यारहवें वर्ष में मूल के साथ–साथ संचित धन जो गलत तरीकों से कमाया गया था, नष्ट हो जाता है । अर्थात पाप और अत्याचार से कमाया धन, अधिक से अधिक दस वर्ष तक मनुष्य के पास रह सकता है । इसके पश्चात् ऐसा धन मूल सहित अपने आप नष्ट हो जाता है । इसलिए पाप की कमाई से सदा दूर रहो ।

5. अतिरूपेण वै सीता अतिगर्वेण रावणरू ।
अति दानाद् बलिर्बद्धो ह्यति सर्वत्र वर्जयेत् ।
अति का तो सभी स्थानों पर परित्याग कर देना चाहिए । अच्छी बाते, अच्छे गुण भी विपत्ति का कारण बन जाते हैं, यदि उनमें अति हो जाए । अत्यधिक दानशीलता के कारण राजा बलि को बंध में बंधना पड़ा और अत्यधिक अहंकार के कारण ही रावण का वध हुआ था । अभिप्राय यह है कि किसी भी कार्य या वस्तु में अत्याधिकता न करें । अन्यथा हानि उठानी पड़ सकती है ।

6. गते शोको न कर्त्तव्यं भविष्यं नैव चिन्तयेत् ।
वर्तमानेन कालेन प्रवर्तन्ते विचक्षणारू ।
जो बीत गया उसे स्मरण करके शोक न करें, शोक मनुष्य के धैर्य को नष्ट कर देता है । शोक के समान दूसरा कोई शत्रु नहीं है । मनुष्य को भविष्य में क्या होगा, इसकी चिन्ता नहीं करनी चाहिए, क्योंकि होनी को नहीं टाला जा सकता , जो विधाता ने हमारे भाग्य में लिखा है वो तो होना निश्चित है । बुद्धिमान व ज्ञानी पुरुष केवल वर्तमान को सिद्ध करने के कार्य में ही लगे रहते हैं । वे भविष्य के विषय में सोचकर अपना समय व्यर्थ नहीं करते ।

उमेश गर्ग
निजी सचिव
एकीकृत वित्तीय सलाहकार (म.क.)
लखनऊ छावनी –2

हिंदी पखवाड़ा वर्ष– 2015 के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताएं

हिन्दी निबंध लेखन प्रतियोगिता

क्रम	विजेता का नाम एवं पद	स्थान
1.	श्री अर्जुन सिंह सोलंकी, लेखा परीक्षक	प्रथम
2.	श्री यशपाल सिंह, लेखा परीक्षक	द्वितीय
3.	कुँवर बाल योगेश्वर सिंह ,व.लेखा परीक्षक	तृतीय

सामान्य हिन्दी ज्ञान प्रतियोगिता

क्रम	विजेता का नाम एवं पद	स्थान
1.	श्री राघवेंद्र सिंह, एम.टी.एस	प्रथम
2.	श्री अनुज कुमार तिवारी, एम.टी.एस	द्वितीय
3.	श्री करमचंद, एम.टी.एस	तृतीय

हिंदी काव्य-पाठ प्रतियोगिता

क्रम	विजेता का नाम एवं पद	स्थान
1	1. कुँवर बाल योगेश्वर सिंह , व.ले.प.	प्रथम
2	2. श्री अमित मिश्रा, लेखा परीक्षक	प्रथम
3	3. श्री अनिल कुमार गुप्त , व.ले.अ.	द्वितीय
4	4. श्री अवधेश कुमार यादव, व.ले.प.	तृतीय
5	5. श्री सुरेश कुमार , लिपिक	तृतीय

हिंदी वाद-विवाद प्रतियोगिता

क्रम	विजेता का नाम एवं पद	स्थान
1	श्री यशपाल सिंह, लेखा परीक्षक	प्रथम
2	श्री विजय कुमार, स.ले.अ.	द्वितीय
3	श्री आर. के. चौबे, व.ले.अ.	तृतीय

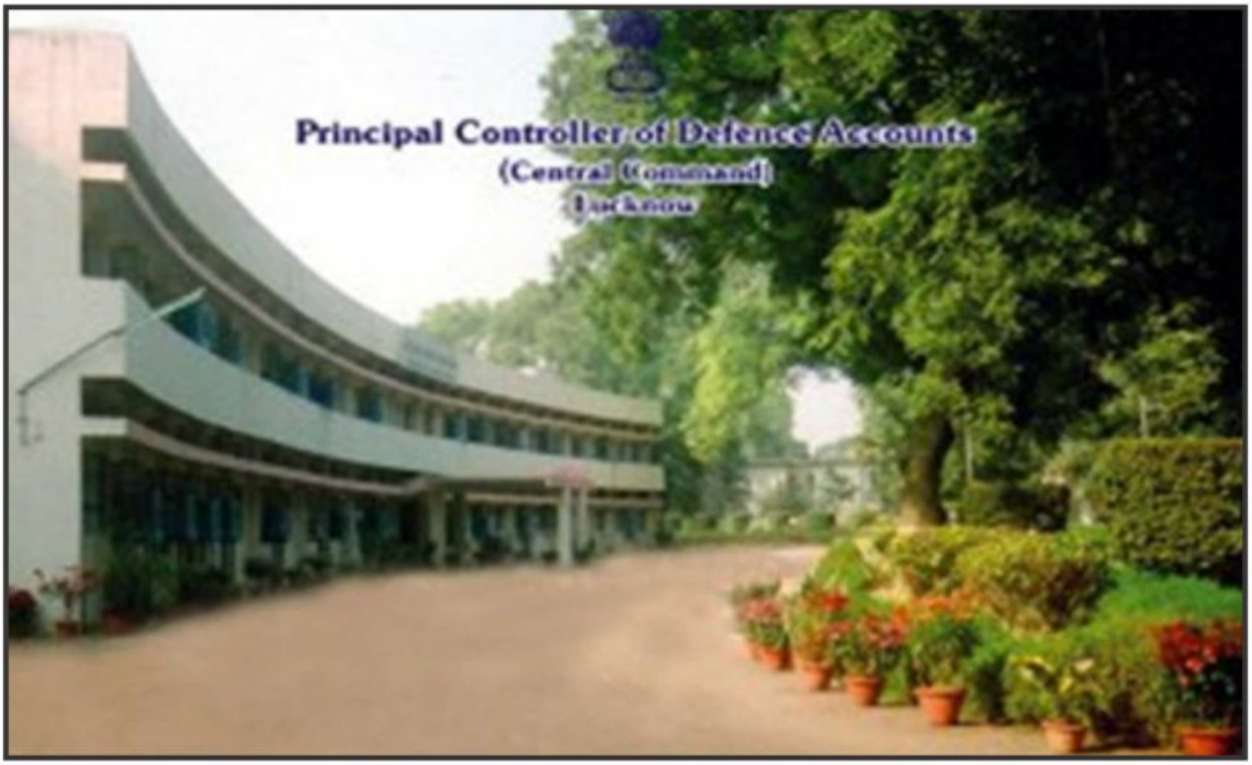
Principal Controller of Defence Accounts
(Central Command)
Lucknow